ग्रीन रिवोल्ट

हरित-नीरा रहे वसुंधरा

पेजः 4

अपराजिता के सुंदर फूल

रविवारीय, 06-12 अक्टूबर 2019, वर्ष-एक, अंक-9,रांची | हिन्दी साप्ताहिक | R.N.I. No. JHAHIN 00962 | कुल पृष्ठ 4 | मूल्य 2 रूपये

आप सभी पाठकों को ग्रीन रिवोल्ट की तरफ से दुर्गा पूजा एवं दशहरे की हार्दिक शुभकमनायें

सूचना

ग्रीन रिवोल्ट के पाठकों से आग्रह है कि आप पर्यावरण, कृषि, जल संरक्षण, पशुपालन, बागवानी , पेट्स, वृक्षारोपण से संबंधित खबरें, समस्यायें, लेख,सुझाव, प्रतिक्रियायें या तस्वीरें हमें अवश्य भेजें। हमारा इमेल एवं ह्वाट्सएप नंबर है।

greenrevolt2019@gmail.com

9798166006

गांधी एक विचारधारा का नाम है - सीएमडी सीसीएल

रांची :सीसीएल दरभंगा हाउस,स्थित विचार मंच में बापू के 150वीं जन्मदिवस के अवसर पर "150वीं गांधी जयंती वर्षगाठ समारोह" का आयोजन किया गया । मुख्य अतिथि सीएमडी सीसीएल गोपाल सिंह, निदेशक (कार्मिक) आर एस महापात्र, निदेशक तकनीकी (संचालन)वी.के. श्रीवास्तव, निदेशक तकनीकी (योजना/परियोजना) भोला सिंह सहित उपस्थित सभी ने पुष्प अर्पित कर राष्ट्रपिता महात्मा गांधी को नमन किया। मुख्य अतिथि ने कहा कि राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की विचारधारा एवं संदेशों को याद करने का दिन है जो हमें सदैव मार्गदर्शित करता है।

भारत की लक्ष्मी अभियान चलाएं

प्रधानमंत्री मोदी ने देश की समृद्धि के लिए बेटियों को प्रोत्साहन देने का आह्वान करते हुए रविवार को कहा कि उन्हें ''भारत की लक्ष्मी' मानकर एक अभियान चलाया जाना चाहिए। इस बार दीपावली पर बेटियों के सम्मान में कार्यक्रम रखे जाने चाहिए। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रविवार को अपने मशहूर रेडियो कार्यक्रम ''मन की बात' में एक अनोखी गतिविधि ''प्लॉगिंग' का जिक्र किया। जोगिंग करते समय कूड़ा उठाकर इक्ट्ठा करने को ''प्लॉगिंग' कहा जाता है। प्रधानमंत्री इस विचार से काफी प्रभावित दिख रहे थे और उन्होंने आह्वान किया कि सभी देशवासी दो अक्टूबर को दो किलोमीटर वाक करें, और कूड़ा इकट्ठा करें ।

दुर्गा पूजा में पंडालों ने दिखायी पर्यावरण और सामाजिक संदेश के प्रति संवेदनशीलता, प्लास्टिक और प्रदूषण से बनी दूरी

श्रद्धा भक्ति और पर्यावरण चिंता एक साथ

रांची : कभी सिर्फ भव्यता और सजावट की होड़ में शामिल रहने वाले रांची के दुर्गा पूजा में एक सुखद बदलाव देखने को मिल रहा है। रांची की दुर्गा पूजा इस जोन में कोलकाता के बाद सबसे भव्य होती है। यहां आस्था के साथ ही दशकों से भव्य और आश्चर्यजनक पंडालों को बनाने की परंपरा रही है। रांची में अयोध्या के प्रस्तावित राम मंदिर से लेकर देश के भव्य मंदिरों, पीठों की प्रतिकृति पंडाल के रूप में बनायी जाती है और उसे देखने दूसरे राज्यों से भी लोग पहुंचते रहे हैं। अपर बाजार के बकरी बाजार में बनने वाला पंडाल तो हर वर्ष अद्भूत होता है। हाल के दशकों में प्रदूषण , पर्यावरण के संकट ने अब इन आयोजनों में भी चिंता पैदा की है। कई पंडालों का निर्माण इकोफ्रेंडली तरीके से किया गया है और सरकारी आदेश के अलावा पूजा समितियों ने खुद ही इस बार प्लास्टिक के उपयोग पर अंकुश रखा है।

आठ पंडालों पर 313 करोड़ रूपये खर्च हुये

रांची के आठ प्रमुख पंडालों के निर्माण में 313 करोड़ रूपये खर्च किये गये। इन पंडालों में भव्यता और रोचकता बनाने के लिये ये खर्च हुये हैं। इसके अलावा करोड़ो रूपये की लागत अन्य पूजा पंडालों को बनाने में आयी होगी? इनमें कोई विशाल रथ का आकार लिये हुये तो कहीं गया के बौद्ध मंदिर और केदार नाथ कहीं सबरीमाला मंदिर, वैष्णो देवी मंदिर, की प्रतिकृति बनायी गयी है। वहीं रांची में दुर्गा बाड़ी की पूजा सादगी के साथ आस्था श्रद्धा भक्ति से होती है। दरअसल लोग भव्यता देखने के लिये ही पंडालों का रूख तो करते हैं, इस लिये पंडालों पर इतना खर्च किया जाता है।

सामाजिक और पर्यावरण संदेश पर जोर

इस बार के पूजा पंडालों में एक खास बात नजर आयी कि, पंडालों को खुबसूरत और भव्य बनाने के साथ ही पर्यावरण बचाने और सामाजिक संदेश देने पर भी जोर दिया गया। जमशेदपुर के आदित्यपुर स्थित पंडाल में प्लास्टिक के दैत्य को दिखाया गया है जो पृथ्वी को अपने हाथों में लिये हुये है। वहीं रांची के बकरी बाजार पंडाल में पर्यावरण बचाने और बढती आबादी पर नियंत्रण का संदेश दिया गया है। रांची के हरमू पंचमंदिर पंडाल में विकास के नाम पर मानव जाति के विनाश को दिखाया गया है। गोलमुरी पंडाल में गया के बौद्ध मंदिर का निर्माण किया गया है और बुद्ध के विश्व शांति का संदेश दिया गया है। कोकर में केदारनाथ आपदा को बताया दिखाया गया है। प्रकृति के अत्यधिक दोहन के कारण त्रासदी का चित्रण इस पंडाल में किया गया है साथ ही पर्यावरण को बचाने का संदेश भी दिया गया है।

बेटी बचाने और सुरक्षा का संदेश : बागबेड़ा टाटा में बेटियों की सुरक्षा और रातू रोड रांची के आरआर स्पोर्टिंग क्लब में बेटी बचाओ का संदेश है और बेटियों की असुरक्षा पर चिंता जतायी गयी है। आर आर स्पोर्टिंक क्लब रातू रोड के मुख्य मुर्तिकार चंदन जाना ने बेटियों के जन्म लेते ही उसके तमाम तरह के समस्याओं में घिरने दहेज समस्या , गलत निगाहों से देखने और बेटियों पर संकट को बहुत ही मार्मिक तरीके से दिखाया है।

ध्वनि प्रदूषण में मामूली कमी आयी है

रांची में कुछ सालों पहले तक पूजा पंडालों में बहुत ही तेज ध्वनि के साथ गाने बजाये जाते थे, और इसमें फिल्मी गाने भी बजाये जाते थे। कई प्रबुद्ध लोगों से लेकर सामाजिक संगठनों ने इस पर आपत्ति जतायी थी और अंततः ऐसे शोरगुल वाले गानों पर रोक लगा दी गयी। उस दौर में पावरफुल सांउड एंप्लीफायर के प्रति दीवानगी थी और फुल साउंड में गाना बजाना ट्रेंड था, लेकिन हाल के कुछ सालों में इसमें कमी देखी गयी है और अब अनावश्यक गाने बजाने या शोर गुल से परहेज देखा जा रहा है। इसका एक कारण ये भी है कि, पहले उत्सव के मौके कम होते थे अब विकास के दौड़ में शहरों मे बाजार मॉल साधन आयोजन इतने हैं कि लोगों की इच्छापूर्ति हो जा रही है।

निर्माल्य समेत अन्य सामग्रियों का उचित निष्पादन जरूरी

भव्य पंडालों एवं प्रतिमाओं में एक से बढ कर एक सजावटी वस्तुओं , फूल मालाओं का उपयोग होता है। पूजन के बाद इन्हें उतार लिया जाता है जिसे निर्माल्य कहते हैं। पूजा के संपन्न होने के बाद इनका सही तरीके से निष्पादन भी जरूरी है। अन्यथा ये तालाबों झीलों को प्रदूषित करते हैं। इसके अलावा पूजनोपरांत इन सामग्रियों की उपेक्षा धार्मिक नजरियो से भी उचित नहीं मानी जाती है। इनका विधि विधान से विसर्जन आवश्यक है।सजावट के इन चमकदार और रंगीन सामग्रियों में कई प्रकार के खतरनाक पदार्थ उपयोग होते हैं जो विसर्जन में तालाबों झीलों में घुल जाते हैं साथ ही कुछ ठोस पदार्थ भी होते हैं जो कचड़े के रूप में एकत्र हो जाते हैं। हालांकि मुंबई समेत देश भर में अब पूजा समितियों ने वैसे निर्माल्य का उपयोग करना शुरू कर दिया है जो इकोफ्रेंडली हैं और इनके जल में घुलने पर भी कोई नुकसान नहीं होता।

मां के दरबार में मुख्यमंत्री

नवरात्र के षष्ठी तिथि पर मुख्यमंत्री रघुवर दास, सांसद चंद्र प्रकाश चौधरी एवं पूर्व केंद्रीय मंत्री जेपी नड्डा ने रजरप्पा पहुंचकर शक्तिपीठ माँ छिन्नमस्तिका की पूजा की

आखिर क्यों पानी पानी हुआ है पटना?

जल मग्न पटना की एक कॉलोनी और राहत में लगे लायन इंटरनेशनल के सदस्य

राजन कुमार

पटना : न गंगा से बाढ आयी न कोई तटबंध टूटा इसके बावजूद एक सप्ताह से ज्यादा हो गये पटना में बाढ की स्थिति है। हालत ये है कि, उपमुख्यमंत्री से लेकर प्रसिद्ध गायिका शारदा सिन्हा तक को रेस्क्यू कर उनके घर से निकाला गया। मुख्य शहर और फ्रेजर रोड जैसे ईलाकों के ब्रांडेड मॉल में भी पानी घुस गया और लाखो का नुकसान हुआ है। पटना के कई नीचले ईलाकों में लोगों ने मकान तो बना लिये, पर ड्रेनेज के लिये कोई जगह नहीं छोड़ी गयी। तेज बारिश के बाद पानी के बह कर बाहर निकलने का कोई रास्ता ही नहीं है। वहीं सरकार पर भी कई सवाल उठते हैं। क्या पिछले कुछ वर्षों में पटना की नालियों की सही ढंग से सफाई हुई थी ?इस मद में कितने खर्च हुए और उसका कितना सदुपयोग हुआ ?वैसे तो थोड़े हा समय म उम्माद स अत्यत आधक वर्षा भारी जल जमाव का मूल कारण रहा। पर नालों की पूरी सफाई हुई होती तो लोगों को थोड़ा कम कष्ट होता। मुख्यमंत्री नितीश कुमार ने कुछ साल पहले पिछले मेयर के समक्ष सार्वजनिक रुप से अपना गुस्सा जाहिर किया था। कुछ नहीं सुधर। आए दिन नगर निगम के विवादास्पद कामों को लेकर खबरें आती रहती हैं। नगरवासियों के इस बार के अपार कष्ट को देखते हुए राज्य सरकार को चाहिए कि वह भ्रष्टाचार के लिए जिम्मेवार अफसरों और कर्मचारियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करे आश्चर्य है कि भारी खर्च के बावजूद मुहल्लों से संप हाउसों तक पानी नहीं पहुंचते। पहुंचते भी हैं तो अधिकतर संप हाउस काम नहीं करते। अब ऐसे में जब पटना के नालियों का नक्शा तक नहीं मिल रहा तो ये हश्र होना ही था।

बिरसा मुंडा के गांव उलिहातु को गोद लेगी बीएयू:कुलपति

सिमडेगा के उलिहातु गांव में कृषि विकास के सभी कार्यक्रमों को चलाया जायेगा। उलिहातु गांव में मीठी क्रांति को बढ़ावा के तहत मधुमक्खी पालन को प्रोत्साहित किया जायेगा :डॉ कुरील (कुलपति बीएयू)

रांची : भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् (आईसीएआर) की क्षेत्रीय अटारी, पटना एवं निदेशालय प्रसार शिक्षा, बिरसा कृषि विश्वविद्यालय, रांची के संयुक्त तत्वावधान में 03 अक्टूबर को 24 जिलों में स्थित कृषि विज्ञान केन्द्रों (केवीके)के कार्यक्रमों की समीक्षा बैठक की अध्यक्षता करते हुए बीएयू कुलपति डॉ आरएस कुरील ने भगवान बिरसा मुंडा के नाम से स्थापित राज्य के एकमात्र कृषि विश्वविद्यालय द्वारा उनके उलिहातु गाँव को गोद लेने की आवश्यकता जताई। बैठक में डॉ सुशील प्रसाद, डॉ अमृत झा, डॉ किरण सिंह, डॉ ललित दास, डॉ अशोक कुमार, डॉ रंजय सिंह एवं डॉ शंकर सिंह सहित सभी 24 केवीके जिलों के वरीय वैज्ञानिक सह प्रधान ने भाग लिया। इस मौके पर कुलपति ने कहा कि जनजातीय बहुल उलिहातु गाँव में आधुनिक कृषि तकनीकों के प्रचार-प्रसार से कृषि विकास बढ़ावा देने की काफी संभावनाएँ है. विश्वविद्यालय द्वारा गाँव में कृषि से जुड़े सफल तकनीकों के माध्यम से जनजातीय किसानों की आमदनी बढ़ाने के कार्यक्रम लागु किये जायेंगे.कुलपति ने कहा कि केंद्र सरकार की क्षमता एवं संपदा परियोजना के जनजातीय उपरियोजना के तहत खुँटी जिले के उलिहातु गाँव को गोद लिया जायेगा. आगे चलकर अन्य आईसीएआर परियोजना के कार्यक्रमों को भी इस गाँव में कार्यान्वित किया जायेगा. उन्होंने कहा कि खुँटी जिले में आ-ईसीएआर,नई दिल्ली से स्वीकृति के बावजूद कृषि विज्ञान केंद्र अभीतक कार्य नहीं कर रहा है. इस परिस्थिति में विश्वविद्यालय द्वारा संचालित केवीके, जनजातीय किसानों को वैज्ञानिक तकनीक से प्रशिक्षित कर उनके बीच 800 मधुमक्खी बॉक्स एवं अन्य जरूरी उपादान वितरित किये जायेंगे. विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों पशुपालन क्षेत्र विभिन्न पशुओं के उन्नत नस्ल को .... शेष पेज 3 पर

आरयू परिसर में वीसी ने की सफाई

सफाई के बाद परिसर

रांची : गांधी जयंती के अवसर पर रांची विवि के कुलपति डॉ.रमेश कुमार पांडेय, अन्य विभागों के शिक्षकों और छात्रों ने मिलकर मोराबादी स्थित विवि परिसर में साफ सफाई की। ज्ञात हो कि पहले आर्ट्स ब्लॉक में जलजमाव की स्थिति हो जाती थी। और विरोध स्वरूप धान भी रोपा गया था। अब उस परिसर को वीसी ने पहल करके खुबसूरत बाग बगीचे वाला परिसर बना दिया है। बेसिक साईंस परिसर भी बहुत ही हरा भरा बगीचे युक्त है।

वन्य प्राणी सप्ताह का शुभारंभ

गांधी जयंती पर वन पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन विभाग ने मनाया कार्यक्रम

रांची: वन पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन विभाग झारखंड सरकार ने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की 150वीं जयंती पर उनके स्वच्छ भारत के सपने को साकार करने के लिये एकल उपयोग होने वाले प्लास्टिक अपशिष्ट उन्मूलन के लिये श्रमदान कार्यक्रम 2 अक्टूबर को सिदो कान्हो पार्क रांची में आयोजित किया। इसके साथ ही वन्य प्राणी सप्ताह का भी शुभारंभ किया गया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में स्कूली छात्र छात्रायें एवं आम जन शामिल हुये। इस दरम्यान श्रमदान करके सिदो कान्हो पार्क एवं ऑक्सीजन पार्क की साफ सफाई की गयी। कार्यक्रम को पीसीसीएफ डॉ. संजयकुमार ने संबोधित किया। वन्य प्राणी सप्ताह के तहत विभाग द्वारा विभिन्न स्कूलों में प्राइमरी एवं हायर सेक्शन के बच्चों के बीच निबंध, चित्रकारी एवं क्विज प्रतियोगिता आयोजित करवाई जायेगी और उन्हें पुरस्कृत किया जायेगा। यह जानकारी विभाग के डीएफओ वन्य जीव राजीव रंजन ने दी।

स्वच्छता अभियान को झारखंड में नयी उर्जा देगा सीसीएल

रांची : स्वच्छता अभियान को झारखंड में एक नई उर्जा एवं गति देने के लिए सेंट्रल कोलफील्ड्स लिमिटेड (सीसीएल) द्वारा झारखंड के लगभग सभी 200 रेलवे स्टेशनों पर शौचालय बनाने के लिए दक्षिण पूर्व रेलवे और राईटस (RITES) के साथ त्रिपक्षीय समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर विगत 01 अक्टूबर को किये गये। प्रत्येक शौचालय ब्लॉक में 07 शौचालय रहेंगे जिसमें महिलाओं के लिए 03, पुरुषों के लिए 03 और दिव्यांगों के लिए 01 का निर्माण किया जायेगा। ये सभी शौचालय लगभग 44 करोड़ रुपये के लागत से बनाए जाएंगे। सीएमडी गोपाल सिंह के नेतृत्व में राज्य के दूरस्थ एवं कठिन क्षेत्रों के साथ-साथ वन क्षेत्रों में स्थित इन रेलवे स्टेशनों पर शौचालय निर्माण की यह पहल की गयी है।

राज्य के 200 रेलवे स्टेशनों पर शौचालय बनाने के लिए रेलवे के साथ समझौता ज्ञापन

चेतावनी एकल प्लास्टिक पर रोक के साथ ही इसके निर्माण पर हो अंकुश

क्या अजर अमर है प्लास्टिक ?

प्लास्टिक का आविष्कार करने वाले ब्रिटिश अलेक्जेंडर पार्केस ने भी कभी नहीं सोंचा होगा कि उनका यह आविष्कार कभी दुनिया के लिये जंजाल बन जायेगा और पर्यावरण का सबसे बड़ा दूश्मन भी। प्लास्टिक की प्रकृति ही कुछ ऐसी है कि वह एक प्रकार से अजर अमर है या अगर इसे पूरी तरह जला कर नष्ट भी किया तो यह जाते जाते खतरनाक गैसों के साथ पर्यावरण को घातक नुकसान पहुंचा जाता है।

एक बार निर्मित प्लास्टिक को हम रिसायकिल तो कर सकते हैं, पर पूरी तरह नष्ट करना एक मुश्किल काम है। आज सारा विश्व इससे त्रस्त है और छुटकारे को प्रयासरत।

प्लास्टिक के अजर अमर होने की बात को हम इन तथ्यों से समझ सकते हैं।

●प्लास्टिक की आधी वस्तुयें हम एक बार उपयोग कर उसे फेंक देते हैं, जो एकल प्लास्टिक कहलाते हैं और यही सबसे खतरनाक हैं। ●हर साल लगभग एक लाख पशु प्लास्टिक बैग के कारण मर जाते हैं। ●प्लास्टिक बैग को खत्म होने में लगभग हजार साल लगते हैं। ●प्लास्टिक के बोतल पर जो एक्सपायरी डेट लिखी होती है, वह पानी के एक्सपायरी के नहीं बल्कि प्लास्टिक बोतल की एक्सपायरी डेट होती है। यानी उस डेट के बाद बोतल का प्लास्टिक कण पानी में घुल कर हमारे लिये खतरनाक हो जाता है। ●पिछले एक दशक में हीं दुनिया का 90 प्रतिशत प्लास्टिक बना है उतना उसके पहले के कई दशकों में भी नहीं बना था। ●भारत में हर साल एक व्यक्ति औसतन दस किलो प्लास्टिक उपयोग करता है, अमेरिका में यह आंकड़ा प्रति व्यक्ति 109 किलो है। ●पिछड़े हुये अफ्रिकी देश रवांडा में प्लास्टिक पूरी तरह से बैन है। ●फिनलैंड में 10 में से 9 प्लास्टिक बोतल रिसायकल कर दिये जाते हैं। ●प्रति मिनट 20 लाख प्लास्टिक बैग सारी दुनिया में उपयोग हो रहे हैं। ●प्लास्टिक को कोई बैक्ट्रिया नष्ट नहीं कर सकता यानी यह सदा पर्यावरण को नुकसान पहुंचाता रहेगा। ●छह अरब किलो प्लास्टिक कचड़े के रूप में समुद्र में फेंका जाता है। इसी कारण से समुद्र सबसे ज्यादा प्रदूषित हुआ है। ●हमारा शरीर प्लास्टिक केमिकल को सोखता है इस केमिकल को बीपीए कहते हैं, जो शरीर के लिये खतरनाक है। ●चीन में कई जगहों पर एंट्री के लिये टिकट के बजाय लोगों से प्लास्टिक बोतल ले ली जाती है जिसे रिसायकल किया जाता है। ●विश्व के ईंधन का 8 प्रतिशत सिर्फ प्लास्टिक निर्माण में खर्च हो जाता है। ●एक प्लास्टिक बैग अपने वजन से दो हजार गुणा ज्यादा वजन उठा सकता है। ●हर साल इतना प्लास्टिक फेंके जाते हैं जिनसे पृथ्वी के चार घेरे बनाये जा सकते हैं। ●एक प्लास्टिक बोतल रिसायकल करके इतनी ऊर्जा बचाई जा सकती है जिसमें 60 वाट का एक बल्ब छह घंटे जलाया जा सकता है।

राष्ट्र निर्माण सेना ने कांके डैम बचाने के लिये रैली निकाली

रांची: कांके डैम संरक्षण समिति के सदस्यों द्वारा डैम के उतरी छोर से कचरा,प्लास्टिक और जलकुंभी आदि निकासी कर सफाई की गई। डैम को स्वच्छ,सुंदर और सुरक्षित रखने के लिए लोगों से गुजारिश की गई। दो अक्टूबर को कांके डैम को प्रदूषण मुक्त करने, प्लास्टिक मुक्त जीवन जीने तथा राक गार्डन की बर्बादी के खिलाफ एक विशाल रैली सह सभा का आयोजन किया गया था। राष्ट्र निर्माण सेना के अध्यक्ष और कांके डैम संरक्षण समिति के संरक्षक अमृतेश पाठक ने किया। रैली में भारी संख्या में पतरा गोंदा,हथिया गोंदा, सोसो,हेसल,लक्ष्मी नगर के सैकड़ों महिलाएँ,बच्चे और पुरुष शामिल हुए। "हम सब ने मिलकर ठाना है ,कांके डैम बचाना है" कांके डैम मे गिरने वाले कचरा और प्लास्टिक युक्त नालों पर रोक लगे, प्लास्टिक का उपयोग बंद हो ,रॉक गार्डन की बर्बादी बंद करो, सौंदर्यीकरण और विकास के नाम पर नदियों,तालाबों,पहाड़ों को बर्बाद करना बंद करो आदि नारों के बीच रैली राक गार्डन के उस स्थल तक पहुंची जहां स्किल डेवलपमेंट सेंटर बनाने के नाम पर पहाड़ को बर्बाद किया जा रहा है। सभा को झारखंड सिविल सोसायटी के आरपी शाही,विकास सिंह,मधुकर जी,मयुख जी, बालेश्वर सिंह,खुशबू कटारूका, रामप्रसाद जालान ने संबोधित किया।

उत्पादन पर अंकुश जरूरी

गांधी जयंती पर देश भर में साफ सफाई के कार्यक्रम चलाये गये। प्लास्टिक को त्यागने की अपील की गयी, और इससे होने वाले तरह तरह के नुकसान को बताया गया। यह सारा प्रयास सराहनीय है, लेकिन इन सबके बीच हम एक तथ्य को हम भूल जाते हैं। सभी एकल प्लास्टिक के उपयोग से बचने की अपील तो करते हैं, पर इसके उत्पादन को रोकने की बात नहीं करते। दो अक्टूबर से प्लास्टिक के कैरी बैग और ऐसे ही अन्य एकल प्लास्टिक उत्पादों पर रोक लगा दी गयी है, लेकिन समस्या है कि अगर एकल प्लास्टिक सामग्री का निर्माण फैक्ट्रियों में हो रहा है, तो वो बाजार में उपलब्ध भी होंगे और दूकानदार उसी में सामग्री थमा देगा। भारत में जनहित के काम को भी लागू कराने के लिये सख्ती करनी होती है। सरकार के लिये इन खतरनाक प्लास्टिक सामग्रियों की मैन्युफैक्चरिंग को रोकना सबसे बड़ी चुनौती है।

अगर हम एकल प्लास्टिक के उत्पादों की लिस्ट देखें तो रोजमर्रा के उपयोग में हम कैरी बैग के अलावा दर्जनों ऐसी चीजें ढो रहे हैं। पहले गोलगप्पे खाने के लिये पत्ते के दोने उपयोग होते थे, अब उसके जगह पर भी प्लास्टिक की कटोरी आती है, कहीं भी दस से बीस रूपये में पानी की बोतल हम खरीदते हैं वो घटिया एकल प्लास्टिक हीं है। प्लास्टिक बोतल का पानी चाहे वह कितना भी महंगा क्यों न हो या कंपनी का दावा कुछ भी हो, वह कभी भी सही नहीं हो सकता। उसके जल में प्लास्टिक के कण जरूर रहते हैं। इस बार दशहरे में पंडालों में प्लास्टिक के उपयोग पर रोक है, कुछ पूजा समितियों ने खुद ही प्लास्टिक के बहिष्कार की घोषणा की है। ये सारे प्रयास बता रहे हैं कि प्लास्टिक से नुकसान के प्रति हम सभी जागरूक हुये हैं, पर अभी बहुत कुछ किया जाना बाकी है। अभी पटना में बाढ की स्थिति है और इसके बारे में एक दिलचस्प जानकारी है कि पटना के बहुत सारे नाले और सिवरेज प्लासिटक कैरी बैग से जाम होते रहे हैं जो भारी बारिश में जल निकासी नहीं कर पाते और बारिश में जलजमाव की स्थिति पैदा हो जाती है। वहां इस प्लास्टिक के कारण हीं खुले या स्लैब से ढके नाले बनवाये गये थे क्योंकि अंडरग्राउंड सिवरेज में प्लास्टिक जमा होने पर उसकी सफाई संभव नहीं थी। इन सभी कारणों को देखें तो ये बात स्पष्ट हो जाती है कि हम प्लास्टिक पर रोक की जिम्मेवारी सरकारों के मत्थे समझ कर हाथ पर हाथ धरे नहीं बैठ सकते। जब तक आम जन खुद सचेत होकर इसके उपयोग से इनकार नहीं करेगा, खरीदने से इनकार नहीं करेगा तब तक यह अभियान रस्मि होकर रह जायेगा।

> अगर रोक के बाद भी बाजार में सब्जी विक्रेता से लेकर राशन दूकानदार कैरी बैग में सामान देता है तो इसका मतलब है कि बैन हो चुके कैरी बैग का निर्माण हो रहा है। यहां दूकानदार पर जुर्माना लगाने के साथ ही सरकार को इसके अवैध निर्माण वाले कारखानों पर भी अंकुश लगाना चाहिये। क्योंकि निर्माण होने पर एकल प्लास्टिक बाजार में भी उपलब्ध होगा। इसका धड़ल्ले से उपयोग भी होगा और हम भारतीयों की आदत नहीं कि दूकानदार से इन कैरी बैग में सामान लेने से इनकार कर दें। हम इसे एक सुविधा मान कर यूं ही इसका उपयोग करते रहेंगे।

प्लास्टिक का आविष्कार सन 1862 में इंग्लैंड के अलेक्जेंडर पार्केस ने किया था। प्लास्टिक शब्द ग्रीक भाषा के प्लास्तिकोज से बना है जिसका मतलब होता है बनाना।

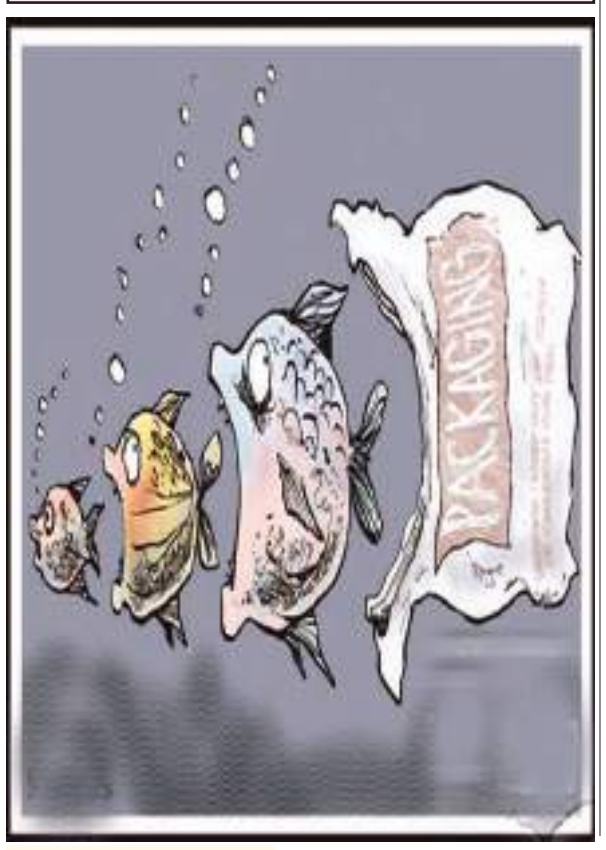

ग्लोबल वार्मिंग के खतरों के अनुरूप बने नीति

भरत झुनझुनवाला

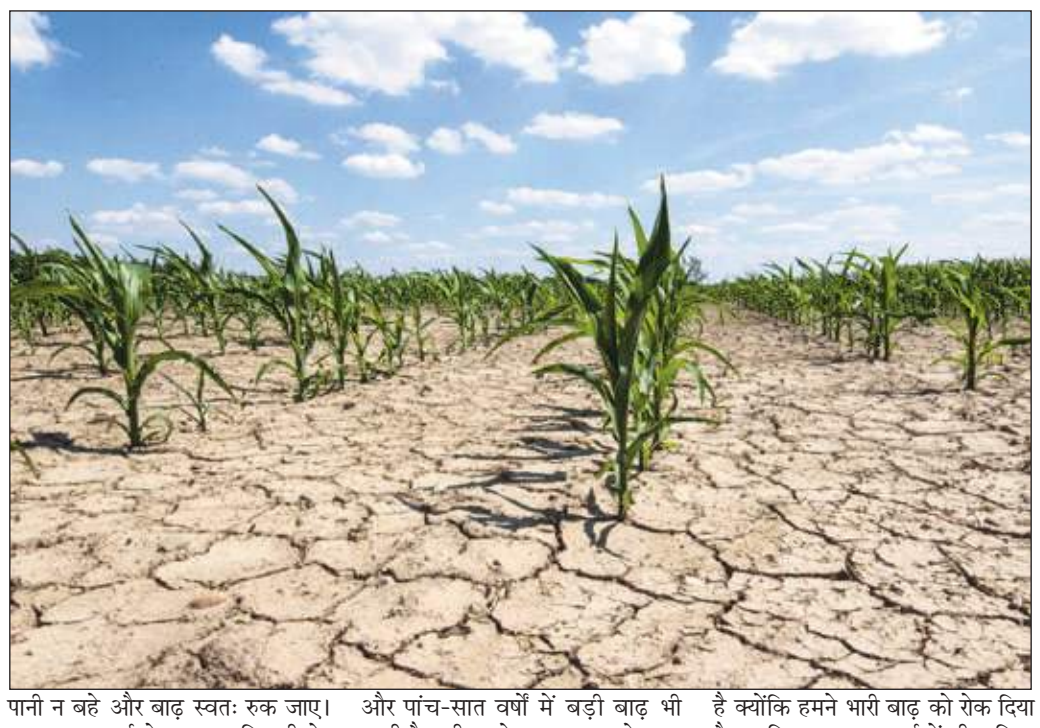

वर्तमान समय में देखा जा रहा है कि किसी क्षेत्र में किसी विशेष समय भारी वर्षा के कारण बाढ़ से तबाही हो रही है। वही क्षेत्र एक माह पहले सूखे की चपेट में था। जैसे इस समय मध्यप्रदेश और पश्चिम बंगाल के मालदा जिले में बाढ़ देखी जा रही है। इस परिस्थिति का एक प्रमुख कारण ग्लोबल वार्मिंग है। धरती का ताप बढ़ रहा है, जिससे हमारे मानसून के पेटर्न में बदलाव आ रहा है। पहले वर्षा तीन माह तक धीरे-धीरे होती थी। खेतों में गिरने वाला पानी जमीन में रुकता था और इसका एक बड़ा हिस्सा जमीन के अन्दर रिस जाता था। लेकिन अब उतना ही पानी 15 दिन में गिर रहा है। वर्षा की गति तीव्र हो गयी है। कुल वर्षा पूर्व की मात्र में होती है लेकिन अब वह थोड़े ही समय में गिरती है। खेतों में गिरने वाले पानी को जमीन के अन्दर रिसने का अवसर नहीं मिलता है। यह पानी नदियों में समा जाता है। नदियों की इतनी क्षमता नहीं है कि वह इस भारी मात्रा में आये हुए पानी को समुद्र तक पहुंचा सके इसलिए बाढ़ आ जाती है। इस प्राकृतिक परिवर्तन से निपटने के स्थान पर हमने प्रकृति की मार को और बढ़ाने का कार्य किया है।

इंजीनियरों का मानना है कि बाढ़ की समस्या से निपटने के लिए हमें नदियों के पानी को बड़े बांधों में रोक लेना चाहिए, जिससे नदियों में अधिक मात्रा में पानी न बहे और बाढ़ स्वतः रुक जाए। साथ-साथ वर्षा के समय यदि नदी के पानी को सिंचाई के लिए निकाल लिया जाये तो नदी में पानी की मात्रा पुनः कम हो जायेगी और तदनुसार बाढ़ का प्रकोप भी कम हो जाएगा। लेकिन आज देश में सभी नदियों पर बांध बनाने एवं सिंचाई के लिए पानी निकालने के बावजूद बाढ़ की समस्या बढ़ती ही जा रही है जो की इंजीनियरों की सोच की कमी को दर्शाती है।

समस्या को समझने के लिए हम गंगा को उदाहरणस्वरूप ले सकते हैं। गंगा की प्रकृति है कि वह हर वर्ष हिमालय से भारी मात्रा में गाद लाती है और गाद को अपने पेटे में हरिद्वार से गंगासागर तक जमा करती जाती है। फिर पांच-सात वर्षों में एक बड़ी बाढ़ आती है जो कि इस जमी हुई गाद को धकेल कर समुद्र में पहुंचा देती है और नदी का पाट फिर अपने पुराने निचले स्तर पर पहुंच जाता है। इस प्रक्रिया में हर साल बाढ़ आती है और पांच-सात वर्षों में बड़ी बाढ़ भी आती है, नदी का पेटा पुनः गहरा हो जाता है। उसके आगे वाले वर्षों में बाढ़ थोड़ी कम हो जाती है क्योंकि नदी की पानी को वहन करने की क्षमता बढ़ जाती है। हमने गंगा के इस स्वभाव में दो प्रकार से बाधा डाली है। पहला, टिहरी जैसे बांध बनाकर हमने भागीरथी के पानी को झील में रोक लिया है। दूसरा, हमने हरिद्वार, बिजनौर और नरोरा में बैराज बनाकर गंगा के पानी को वर्षा के समय भी निकाला है। इन दोनों कारण से गंगा में अब हर पांच-सात वर्षों में आने वाली भारी बाढ़ समाप्त हो गयी है। नीचे की गंगा का बहाव पूर्व की तुलना में कम हो गया है। इस बहाव की कमी से तत्काल लाभ होता है क्योंकि पानी की मात्रा कम होती है और बाढ़ कम आती है। लेकिन इस कम पानी की मात्रा में भी जो गाद आती है वह गाद निरंतर गंगा के पेटे में बैठती जाती है। अब इस बैठी हुई गाद को समुद्र तक धकेलने की क्षमता गंगा में नहीं रह जाती है क्योंकि हमने भारी बाढ़ को रोक दिया है। इसलिए अब कम वर्षा में भी अधिक बाढ़ आती है। गाद के नदी के पेटे में निरंतर बैठते जाने से गंगा का पेटा ऊंचा होता जा रहा है। गंगा की अब पानी वहन करने की क्षमता घट रही है और कम वर्षा में भी बाढ़ आने लगी है। टिहरी जैसे बांधों को बनाने से नीचे के क्षेत्रों में गाद का आना भी कम हुआ है परन्तु यह तात्कालिक प्रभाव मात्र है। यद्यपि अन्य नदियों का अध्ययन नहीं देखा गया है फिर भी अनुमान है कि हर नदी की देश में ऐसी ही परिस्थिति है।

नदी के पानी का निश्चित रूप से सिंचाई के लिए उपयोग होना चाहिए। इस-के इस उपयोग के दो रास्ते हैं। एक रास्ता यह है कि पानी को बड़े बांधों में रोक लिया जाये और जाड़े और गर्मी के समय छोड़ा जाए, जिससे नहर के माध्यम से सिंचाई हो सके। दूसरा उपाय यह है कि हम टिहरी जैसे बांधों को हटा दें और नदी के पानी को बाढ़ के समय फैलने दें। जब बाढ़ आती है तो नदी का पानी फैलता है और बड़े क्षेत्र में पानी जमीन में रिसकर जमीन के नीचे समा जाता है, जिसको हम जाड़े और गर्मियों में ट्यूबवेल के माध्यम से निकालकर इस्तेमाल कर सकते हैं। दोनों ही तरह से हम नदी के पानी का संग्रहण करते हैं और उसका सिंचाई के लिए उपयोग करते हैं। लेकिन अंतर यह है कि जब हम बांध में पानी को रोक कर सिंचाई के लिए उपयोग करते हैं तो पानी की 15 से 20 प्रतिशत मात्रा बांध के जलाशय से वाष्पीकरण से ख़त्म हो जाता है। इसके बाद इस पानी को नहर के माध्यम से खेतों तक पहुंचाने में पुनः 15 से 20 प्रतिशत पानी की बर्बादी होती है। यदि हम बांध को हटा दें और पानी को फैलने दें तो यह पानी भूमिगत तालाबों में जमा हो जाता है लेकिन वहां इसका वाष्पीकरण नहीं होता है। नहर से भी इसे एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाने की जरूरत नहीं होती है क्योंकि इससे आप कहीं पर भी ट्यूबवेल के माध्यम से निकाल सकते हैं। इसलिए इन दोनों ही तरह से हम सिंचाई कर सकते हैं। लेकिन बाढ़ के माध्यम से नदी की गाद को समुद्र तक पहुंचाने की क्षमता बनी रहती है, जिससे अंततः बाढ़ भी कम आती है। हमें सिंचाई की समस्या को ग्लोबल वार्मिंग के साथ जोड़कर देखना होगा। उपाय यह है कि हर खेत में गिरने वाली वर्षा को वहीं पर रोक करके भूमि के अन्दर रिसाने का प्रयास किया जाये। इसके लिए क़ानून अथवा किसानों को इनसेंटिव दिया जाना चाहिए। दूसरा, हमें बांध हटाकर भारी बाढ़ को बनाये रखना चाहिए, जिससे कि भूमिगत जल का पुनर्भरण भी हो और नदी जमी हुई गाद को धकेलकर समुद्र तक ले जाए। तीसरे, हर नदी के पाट पर बाहुबलियों ने कब्ज़ा कर रखा है। उनसे नदी की मुक्ति करानी चाहिए, जिससे कि नदी की गाद को समुद्र तक पहुंचाने की क्षमता पुनः स्थापित हो जाए।

1994 के बाद हुई इतनी ज्यादा बारिश, टूट गए कई रेकॉर्ड टूट गये, और सामन्य मॉनसून की भविष्याणी गलत साबित हुयी है

60 साल में सबसे देरी से खत्म होगा मॉनसून

> तो क्या अब मॉनसून आगे की ओर शिफ्ट हो रहा है? सामान्यत: जून में आने वाला मॉनसून अब जुलाई से प्रारंभ हो रहा है और अक्टूबर में खत्म हो रहा है

मौसम विभाग के मुताबिक 1994 के बाद पहली बार देश में इतनी ज्यादा बारिश हुई है। इसके अलावा अगस्त महीने में 1917 के बाद दूसरी बार इतनी बारिश हुई। अब भी बारिश की वजह से कई राज्यों में बाढ़ जैसे हालात बने हुए हैं। मौसम विभाग के मुताबिक इस बार सामान्य से काफी ज्यादा बारिश दर्ज की गई है और 1994 के बाद ऐसा पहली बार हुआ है। विभाग के मुताबिक देश में 88 सेमी वर्षा दर्ज की गई, अब भी कई राज्यों में बारिश जारी है सौराष्ट्र में सामान्य तौर पर 1 सितंबर तक ही बारिश होती थी लेकिन इस बार 10 अक्टूबर तक बारिश का अनुमाना है।

1917 के बाद दूसरी बार अगस्त महीने में इतनी बारिश देखी गई है

इस साल का मॉनसून सीजन खत्म हो गया है लेकिन बारिश ने कई रेकॉर्ड तोड़ दिए हैं। सितंबर महीना बीतने के बाद भी उत्तर भारत के कई इलाकों में बारिश जारी है और नदियां उफान पर हैं। सामान्य तौर पर आधे सितंबर के बाद इतनी ज्यादा बारिश नहीं देखी जाती है। मौसम विभाग के मुताबिक इस बार बारिश ने पिछले 25 साल का रेकॉर्ड तोड़ दिया है। इससे पहले 1994 में इतनी बारिश हुई थी। मौसम विभाग के कुल 36 सब डिविजन्स में 12 में सामान्य से ज्यादा बारिश दर्ज की गई जबकि 19 में नॉर्मल बारिश रेकॉर्ड हुई। इस बार देश में 88 सेंटीमीटर बरसात रेकॉर्ड की गई है। बता दें कि अब भी उत्तर प्रदेश और बिहार में बारिश की वजह से बाढ़ जैसे हालात बने हुए हैं और दोनों राज्यों में बारिश के कारण लगभग 129 लोगों की मौत हो गई है।

दक्षिण-पश्चिम भारत की बात करें तो इस बार 10 अक्टूबर तक बारिश होने की संभावना है जबकि सामान्य तौर पर यहां 1 सितंबर के बाद भारी बारिश नहीं होती है। 2007 में 30 सितंबर तक बारिश हुई थी लेकिन इस बार 1961 के बाद पहली बार इतने ज्यादा दिनों तक बारिश देखी जा रही है। 1961 में भी मॉनसून के लौटने की तारीख 1 अक्टूबर थी।

इस बार बरसात के मौसम में उत्तर-पूर्व, गुजरात, उत्तर प्रदेश, बिहार, हिमाचल प्रदेश और राजस्थान में लोगों को बाढ़ का सामना करना पड़ा। अब भी गुजरात, उत्तर प्रदेश और बिहार बाढ़ के हालात से जूझ रहे हैं। 1994 के बाद इस साल बारिश का लॉन्ग पीरियड एवरेज सामान्य का 110% है। 2001 के बाद नॉर्थ ईस्ट में इस बार इतनी बारिश देखी गई है। हालांकि 2007 में भी उत्तर-पूर्व में भारी बारिश हुई थी।

1996 के बाद पहली बार अगस्त में इतनी बारिश हुई है। इसके अलावा 1917 के बाद सितंबर में दूसरी बार इस कदर बरसात देखी गई। मौसम विभाग के मुताबिक जुलाई और अगस्त में हुई बरसात अनुमान से ढाई गुना ज्यादा है। इस बार

मौसम विभाग ने केरल तट पर मॉनसून पहुंचने की तारीख 6 जून बताई थी जबकि यह आठ जून को तट पर पहुंचा था।

1960 के बाद पहली बार मॉनसून इतनी देरी से अलविदा कहेगा। भारतीय मौसम विभाग के प्रमुख मृत्युंजय महापात्र के मुताबिक 5 अक्टूबर तक मॉनसून के लौटने का कोई संकेत नहीं है। उन्होंने बताया, '5 अक्टूबर तक मॉनसून के लौटने की शुरुआत का कोई संकेत नहीं है। दरअसल पश्चिमी राजस्थान जहां से मॉनसून का लौटना शुरू होता है, वहां अगले कुछ दिनों तक और ज्यादा बारिश का अनुमान है।'

आमतौर पर 1 सितंबर से ही मॉनसून का लौटना हो जाता है शुरू

आम तौर पर देश से मॉनसून की विदाई पश्चिमी राजस्थान से 1 सितंबर के आस-पास शुरू हो जाती है। लेकिन इस बार पश्चिमी राजस्थान में ही सितंबर के आखिर और अक्टूबर के पहले हफ्ते में भी बारिश का पूर्वानुमान है। इससे पहले इतनी देरी से मॉनसून की विदाई 1960 में हुई थी। उसके बाद 2007 में भी काफी देरी से मॉनसून का लौटना शुरू हुआ था जब उसकी विदाई की शुरुआत 30 सितंबर से हुई थी। बिहार में 29 सितंबर तक मूसलाधार बारिश की चेतावनी थी

पुणे, हैदराबाद, लखनऊ, वाराणसी, भोपाल समेत देश के कई हिस्सों में भारी बारिश के बीच मौसम विभाग ने बिहार में मूसलाधार बारिश की चेतावनी दी थी। मौसम विभाग के मुताबिक 29 सितंबर को बिहार में भारी बारिश हो सकती है। शनिवार को कुछ इलाकों में तो 'बहुत ही ज्यादा बारिश' का पूर्वानुमान है।बंगाल की खाड़ी में कम दबाव का क्षेत्र बनने से और बढ़ेगी मुसीबत इस हफ्ते बंगाल की खाड़ी में कम दबाव का क्षेत्र बनने से तेलंगाना और दक्षिण भारत के दूसरे हिस्सों में असामान्य बारिश हो रही है। महाराष्ट्र के पुणे में तो बारिश ने भारी तबाही मचाई है।

अमेजन इंडिया 2020 तक एक बार इस्तेमाल किए प्लास्टिक को करेगी बंद

ई-वाणिज्य क्षेत्र की प्रमुख कंपनी अमेजन इंडिया ने बुधवार को कहा कि उसने जून, 2020 तक एक बार में इस्तेमाल में लाये जाने वाले प्लास्टिक का उपयोग पूरी तरह बंद करने का लक्ष्य रखा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पर्यावरण बचाने के लिए लोगों से इस तरह के प्लास्टिक का इस्तेमाल बंद करने का आग्रह किया है।नयी दिल्ली। ई-वाणिज्य क्षेत्र की प्रमुख कंपनी अमेजन इंडिया ने बुधवार को कहा कि उसने जून, 2020 तक एक बार में इस्तेमाल में लाये जाने वाले प्लास्टिक का उपयोग पूरी तरह बंद करने का लक्ष्य रखा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पर्यावरण बचाने के लिए लोगों से इस तरह के प्लास्टिक का इस्तेमाल बंद करने का आग्रह किया है। अमेजन ने कहा कि उसके पूर्ति केंद्रों पर सामानों की पैकिंग के लिए इस्तेमाल की जाने वाली सामग्रियों में इस तरह के प्लास्टिक की हिस्सेदारी सात प्रतिशत से भी कम है। अमेजन इंडिया के उपाध्यक्ष (ग्राहक पूर्ति) अखिल सक्सेना ने कहा, अमेजन इंडिया टिकाऊ आपूर्ति श्रृंखला के लिए प्रतिबद्ध है, जिसमें प्रौद्योगिकी के इस्तेमाल से पैकिंग सामग्री के सबसे अच्छे इस्तेमाल, कचरा में कमी लाने और पर्यावरण के अनुकूल पैकिंग तंत्र विकसित करने का लक्ष्य है।

एक मीटर से ज्यादा बढेगा समुद्र का स्तर

वैश्विक स्तर पर समुद्र का जल स्तर 2100 तक 1.1 मीटर बढ़ने का अनुमान है। यह तब होगा यदि दुनिया भर के देशों ने उत्सर्जन को अच्छी तरह से सीमित नहीं किया। यह बात इंटरगवर्नमेंटल पैनल क्लाईमेट चेंज (आईपीसीसी) की एक नई रिपोर्ट में कहा गया है। यही नहीं भले ही देश उत्सर्जन को प्रतिबंधित करने में सक्षम हों, फिर भी यह सन 2100 तक 30 से 60 सेंटीमीटर बढ़ने का अनुमान लगाया गया है। ध्यान रहे 20 वीं शताब्दी के दौरान वैश्विक समुद्र का स्तर लगभग 15 सेमी बढ़ गया था। यह वर्तमान में 3 .6 मिलीमीटर प्रति वर्ष की गति से बढ़ रहा है। रिपोर्ट के मुताबिक निचले इलाकों में रहने वाले 680 मिलियन लोगों के जीवन पर इसका सीधा असर पड़ने की संभावना जताई गई है। ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन ने वर्तमान वैश्विक उत्सर्जन को पूर्व-औद्योगिक स्तर से 1डिग्री सेल्सियस ऊपर धकेल दिया है। अतिरिक्त तापमान के कारण हर साल और चालू शात्बदी के मध्य के कई क्षेत्रों के समुद्री के स्तर में बढ़ोतरी संभव है।

शोध

तारों में विस्फोट के चलते हम दो पैरों पर चले

मुकुल व्यास

पृथ्वी पर मनुष्य की विकास प्रक्रिया में एक बड़ी छलांग उस समय लगी जब हमारे पूर्वजों ने दो पैरों पर चलना आरंभ किया। दो पैरों पर चल कर मनुष्य ने दुनिया फतह कर ली, जबकि चार पैरों पर चलने वाली अन्य वानर प्रजातियां पिछड़ गईं। वैज्ञानिक पिछले काफी समय से यह पता लगाने की कोशिश कर रहे हैं कि आखिर मनुष्य के पूर्वजों ने कब और किन हालात में दो पैरों पर चलने का विकल्प अपनाया। अमेरिकी वैज्ञानिकों ने हाल ही में इस बारे में एक नई थियरी रखते हुए ब्रह्मांडीय हस्तक्षेप की तरफ इशारा किया है। उनका कहना है कि तारों में विस्फोट से मनुष्य को दो पैरों पर चलना शुरू करने में बड़ी मदद मिली।

पहली नजर में यह थियरी चौंकाती है। भला तारों में विस्फोट का इंसान के दो पैरों पर चलने से क्या संबंध हो सकता है ! रिसर्चरों के मुताबिक करीब 70 लाख वर्ष पहले हमारी मिल्कीवे आकाशगंगा के हमारे हिस्से में अनेक तारों में विस्फोटों का सिलसिला आरंभ हुआ। विस्फोटित तारों (सुपरनोवा) ने सभी दिशाओं में शक्तिशाली ब्रह्मांडीय किरणों की बौछारें छोड़ीं। पृथ्वी पर 'बमबारी' करने वाली इन ब्रह्मांडीय किरणों ने वायुमंडल को आयोनाइज करके उसे सुचालक बना दिया। अणु या मॉलिक्यूल द्वारा नेगेटिव या पॉजिटिव चार्ज अर्जित किए जाने को आयोनाइजेशन कहते हैं। आयोनाइजेशन के बाद बिजली चमकने की फ्रिक्वेंसी बढ़ गई।

रिसर्चरों ने 'जर्नल ऑफ जियॉलजी' में लिखा है कि बार-बार बिजली गिरने से अफ्रीका के जंगलों में आग लगने की घटनाएं बढ़ गईं। बड़े-बड़े पेड़ों का सफाया हो गया और जंगल लंबे घास के मैदानों में तब्दील हो गए। मैदानों में गिने-चुने पेड़ रह जाने के बाद हमारे पूर्वजों ने नई परिस्थितियों में खुद को ढालने की कोशिश की। मनुष्य का दो पैरों पर चलना इन्हीं कोशिशों का नतीजा था।

इतिहासविदों के मुताबिक दो पैरों से चलने की शुरुआत करीब 60 लाख वर्ष पहले सहेलेन्थ्रोपस ने की थी। सहेलेन्थ्रोपस में एप और मनुष्य जैसे गुण थे। इस प्राचीन प्रजाति की खोज अफ्रीकी देश चाड से मिले जीवाश्मों से हुई। एक प्रचलित थियरी यह कहती है कि जलवायु परिवर्तन से अफ्रीका का लैंडस्केप बदला और घने जंगलों के स्थान पर घास के

मैदान रह गए जहां सिर्फ गिने-चुने पेड़ थे। यूनिवर्सिटी ऑफ कैन्सस के रिसर्चर और इस अध्ययन के लेखक एड्रियन मेलॉट का कहना है कि विस्फोटित तारों के प्रभावों से पहले ही मनुष्य के पूर्वज खड़े हो कर चलना सीखने लगे थे।

लेकिन उनका भी मानना है कि तारों में हुए उग्र विस्फोटों ने दो पैरों पर चलने के सिलसिले को आगे बढ़ाया। उन्होंने कहा कि शुरू-शुरू में जंगलों की आग बिजली गिरने से लगी और उसमें मनुष्य की कोई भूमिका नहीं थी। यह स्वाभाविक सी बात है कि जब जंगलों में आग लगेगी तो आवास स्थलों की भी क्षति होगी। उस समय जंगलों की जगह घास के मैदानों में खड़े हो कर सीधे चलना ज्यादा लाभदायक था। ऐसे में एक पेड़ से चलकर दूसरे पेड़ तक पहुंचना अपेक्षाकृत आसान था और बड़ी-बड़ी घासों के पीछे छिपे शिकारी जानवरों को भी देखा जा सकता था।

वैज्ञानिकों ने अनुमान लगाया है कि पृथ्वी से करीब 164 प्रकाश वर्ष दूर विस्फोटित हुए एक तारे से निकली ब्रह्मांडीय किरणों ने वायुमंडल के आयोनाइजेशन में 50 प्रतिशत की वृद्धि की। आम तौर पर ये किरणें वायुमंडल के ऊपरी हिस्से को आयोनाइज करती हैं, लेकिन निकटवर्ती विस्फोटित तारों से आने वाली ब्रह्मांडीय किरणें वायुमंडल को पूरी गहराई तक भेद देती हैं।

यदि वैज्ञानिकों की बात सही है तो यह सवाल भी उठता है कि क्या तारों में भविष्य में होने वाले विस्फोट पृथ्वी के जंगलों में ज्यादा आग सुलगा सकते हैं। राहत की बात है कि फिलहाल ऐसी कोई आशंका नहीं है। यह थियरी पूरी तरह सही साबित हो जाए तब भी जो सबसे नजदीकी तारा -बेलजिसस- विस्फोटित होने वाला है, वह हमसे 642 प्रकाश वर्ष दूर है और उसके विस्फोट में भी अभी हजारों नहीं, लाखों साल लगेंगे।

डिसक्लेमर : ऊपर व्यक्त विचार लेखक के अपने हैं

सीएमपीडीआई के 3 सदस्यों को भावभीनी विदाई दी गई

रांची : सीएमपीडीआई परिवार के 3 सदस्यों को ''कांफ्रेंस हॉल'' में सेवानिवृत्ति के मौके पर आयोजित एक समारोह में भावभीनी विदाई दी गई। इनमें एस0के0 मंडल-मुख्य प्रबंधक (सीएमपी), विनोद कुमार-मुख्य प्रबंधक (ईएंडम) एवं राकेश रंजन-वरीयवैज्ञानिक सहायक शामिल हैं। इस मौके पर सीएमपीडीआई के निदेशक (तकनीकी/ईएस) श्री के0के0 मिश्रा एवं निदेशक (तकनीकी /आरडीएंडटी/सीआरडी) श्री आर0एन0 झाने सेवानिवृत्त कर्मियों को पुष्पगुच्छ, मान-पत्र, प्रतीक चिह्न व शॉल देकर कम्पनी की ओर सम्मानित किया। ए0के0 राणा ने सभी सेवानिवृत्त कर्मियों के लिए उज्जवल भविष्य, उत्तम स्वास्थ्य, सुखी एवं दीर्घायु जीवन की कामना की।

राजभाषा पुरस्कार वितरण सह समापन समारोह

सीसीएल मुख्यालय के ''विचार मंच'' में हिन्दी दिवस-सह-पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि सीसीएल के अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक गोपाल सिंह तथा विशिष्ट अतिथि विनोबा भावे विश्वविद्यायलय, हजारीबाग के सहायक प्रचार्य डॉ. सुबोध सिंह एवं कर्मचारीगण उपस्थित थे।इस अवसर पर माननीय कोयला मंत्री, भारत सरकार प्रहलाद जोशी का संदेश महाप्रबंधक एस.के. सिंह ने पढ़कर उपस्थित सभी को सुनाया। मुख्य अतिथि गोपाल सिंह ने सभी को संबोधित करते हुए कहा कि कोई भी देश, भाषा की बिना गुंगा है और भाषा के बिना राष्ट्र के विकास कल्पना नहीं की जा सकती है।

दरभंगा हाउस में स्वच्छता रैली" का आयोजन

रांची : स्वच्छता के प्रति जोरूकता के उद्देश्य से आयोजित स्वच्छता रैली" में सैकड़ो की संख्या में बच्चो, युवाओं एवं सीसीएल कर्मियों ने भाग लिया तथा ऑफिस एवं आसपास के स्थानों को स्वच्छ एवं प्लास्टीक फ्री बनाने का संदेश के साथ साथ स्वच्छता अभियान में सभी को योगदान देने हेतु प्रेरित किया। मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित सीएमडी सीसीएल गोपाल सिंह, व एन.के. अग्रवाल ने रैली की शुरूआत की। रैली जवाहर नगर कॉलोनी से शुरू होकर कांके रोड, सीएमपीडीआई, रॉक गार्डेन होते हुए गांधीनगर कॉलोनी, सीसीएल में समाप्त हुई।

अपने बच्चों की तरह पेड़ों की सुरक्षा करते हैं उमाशंकर

पौधे लगाना मुश्किल काम नहीं है, ये कोई भी कर सकता है, लेकिन पौधों की पेड़ बनने तक हिफाजत करना मुश्किल है। माँ बनकर उनकी बच्चों की तरह देखभाल करनी होती है, इसलिए आप पौधे तभी लगाएं जब आप यह ज़िम्मेदारी उठाने के लिए तैयार हों' ये कहना है भोपाल निवासी **उमाशंकर तिवारी** का।

बागमुगलिया एक्सटेंशन कॉलोनी विकास समिति के अध्यक्ष तिवारी अब तक 1200 से ज्यादा पौधे लगा चुके हैं और खास बात यह है कि इनमें से अधिकांश पौधे अब पेड़ बन चुके हैं। पर्यावरण संरक्षण के प्रति जुनूनी तिवारी के घर के चारों तरफ आपको ऊँचे-ऊँचे पेड़ नज़र आएंगे, जो उनके प्रयासों के चलते ही 'नवजात' से 'पूर्व विकसित' अवस्था में पहुँच पाए हैं। भोपाल सहित देश के अधिकांश हिस्से वातावरण में आए बदलाव की मार झेल रहे हैं। इसकी एक बड़ी वजह कम होता ग्रीन कवर है। कभी स्मार्ट सिटी, तो कभी मेट्रो के नाम पर पेड़ों की कुर्बानी दी जा रही है। जितनी तादाद में पेड़ काटे जा रहे हैं, उससे दोगुनी तादाद में भी यदि पौधे रोप जाएँ तो भी नुकसान की भरपाई संभव नहीं। क्योंकि एक पौधे को पेड़ बनने में सालों लग जाते हैं और देखभाल के अभाव में इतने लंबे समय तक उसके जीवित रहने की संभावना भी कम रहती है। तिवारी इस बात को बखूबी समझते हैं, इसलिए एक तरफ जहां वह पेड़ों की कटाई का विरोध करते हैं, वहीं दूसरी तरफ पौधे लगाकर उनकी रक्षा का संकल्प भी लेते हैं। जनभागिता से पौधारोपण करते उमाशंकर तिवारी।

भोपाल का बागमुगलिया इलाका काफी हरा-भरा है। यहां पर्यावरण के लिए हितकारी पेड़ जैसे कि नीम, पीपल, बरगद आदि अच्छी खासी संख्या में हैं। तिवारी का जोर खासकर ऐसे ही पौधे रोपने पर रहता है। हाल ही में प्रशासन के सहयोग से बागमुगलिया एक्सटेंशन कॉलोनी के रहवासियों ने 2000 से ज्यादा पौधे लगाए, जिनमें नीम, पीपल, बरगद के साथ-साथ

फल वाले पौधे ज्यादा थे। ढोल-नगाड़ों के साथ हुए इस पौधारोपण कार्यक्रम के पीछे भी एक कहानी है। दरअसल, तिवारी मानसून के आगाज़ के साथ ही बागमुगलिया से लेकर कटारा हिल्स तक पौधे लगाने की तैयारी कर रहे थे। बागमुगलिया पथरीला इलाका है, लिहाजा यहाँ पौधों के लिए गड्ढे खोदना आसान नहीं रहता। इसलिए तिवारी ने अलग-अलग व्हाट्सअप ग्रुप्स पर गड्ढे करने के लिए मजदूरों या जेसीबी मशीन उपलब्ध कराने की अपील की थी। एक दिन उनके पास किसी महिला का फोन आया, जिन्होंने पहले पौधारोपण के उनके अभियान के बारे में सवाल-जवाब किए और फिर हर संभव मदद का आश्वासन दिया। ये महिला कोई और नहीं बल्कि संभागीय आयुक्त कल्पना श्रीवास्तव थीं।

वह कहते हैं, ''जानकर अच्छा लगा कि सरकारी स्तर पर कोई अधिकारी पर्यावरण संरक्षण में इतनी दिलचस्पी लेता है। प्रशासन की तरफ से हमें निशुल्क पौधे उपलब्ध कराए गए और गड्ढे आदि करवाने की व्यवस्था भी की गई। उस दौरान सभी सक्रिय रहवासियों ने मिलकर 2000 पौधे लगाए। हमनें ढोल-नगाड़ों के साथ घूम-घूमकर पौधायात्रा निकाली, ताकि लोग घरों से बाहर निकलें, प्रेरित हों और इस अभियान का हिस्सा बनें।'' करीब दो दशक पहले जब उमाशंकर तिवारी बागमुगलिया रहने आए तब यहां हरियाली तो थी, लेकिन ज्यादा नहीं। इसके अलावा पर्यावरण हितैषी पेड़ों की भी कमी थी। सबसे पहले तिवारी ने अपने आसपास पौधे लगाना शुरू किया और बच्चों की तरह उनकी देखभाल करते रहे। सुबह-शाम वह घर से पानी लेकर जाते और पौधों की प्यास बुझाते। उनका लगाया हुआ पीपल का पौधा आज 19 साल का हो गया है और गर्मी के दिनों में सूरज की तपिश से राहत प्रदान करता है। समय के साथ धीरे-धीरे उन्होंने कई लोगों को अपने इस अभियान से जोड़ा और आज उनकी पर्यावरण संरक्षण टीम में अनगिनत नाम शामिल हैं। हालांकि, तिवारी किसी पर निर्भर नहीं रहते। उन्हें यदि कुछ करना है, तो बस करना है, फिर इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि कौन उनके साथ है, कौन नहीं। उमाशंकर तिवारी और उनकी टीम के लिए सबसे मुश्किल होता है गर्मियों में पौधों की हिफाजत करना, क्योंकि पानी के अभाव में पौधे दम तोड़ देते हैं और इतने बड़े इलाके में घूम-घूमकर हर पौधे की प्यास बुझाना भी आसान नहीं। तो इसका हल कैसे निकालते हैं? इसके जवाब में वह कहते हैं, ''यह निश्चित तौर पर मुश्किल काम है। पहले की बात अलग थी, शुरुआत में मैंने आसपास पौधे लगाए इसलिए घर से ही उनके लिए पानी ले जाना संभव था, लेकिन अब हमारा दायरा बेहद विस्तृत हो गया है। इसलिए हमें टैंकर बुलवाने पड़ते हैं, पर समस्या इसमें भी है। गर्मी के मौसम में टैंकर की डिमांड बढ़ जाती है और यही टैंकर मालिकों के लिए कमाई का समय होता है। लिहाजा वह चाहते हैं कि जल्दी से जल्दी पानी पहुँचाएं जबकि पौधरोपण करने वाली टीम के साथ यह मुमकिन नहीं हो पाता क्योंकि रुक-रुककर प्रत्येक पौधे में पानी डालना होता है। इस वजह से कई बार वह आनाकानी भी करते हैं, हालांकि, उमाशंकर तिवारी और टीम किसी न किसी तरह व्यवस्था कर ही लेते हैं। तिवारी यह भी सुनिश्चित करते हैं कि पौधों की मवेशियों से रक्षा के लिए ट्री गार्ड लगाए जाए। ऐसे में यह सवाल मन में उठना लाज़मी है कि आखिर इस सबके लिए पैसा कहाँ से आता है? इस पर वह कहते हैं, 'जनसहयोग से। कॉलोनी में कई ऐसे लोग हैं जो पर्यावरण संरक्षण के अभियान में उनके साथ हैं, वह समय-समय पर किसी न किसी रूप में सहयोग करते रहते हैं और जो आर्थिक सहयोग नहीं कर पाते, वे श्रमदान कर देते हैं। विकास के नाम पर पेड़ों की कुर्बानी प्रशासन द्वारा ली जाती है, लेकिन कई बार आम लोग भी बिना किसी बड़ी वजह के सालों पुराने पेड़ काट डालते हैं। ऐसे लोग उमाशंकर तिवारी की नज़र में पर्यावरण के सबसे बड़े गुनहगार हैं और उनकी कोशिश रहती है कि गुनहगारों को उनके कीये की सजा मिले। वे लोगों को पर्यावरण संरक्षण के प्रति लोगों को जागरुक करने का भी काम कर रहे हैं। फिलहाल वह मेट्रो की जद में आने वाले पेड़ों को बचाने की जद्दोजहद में लगे हैं। तिवारी ने केवल पौधे रोपने तक ही खुद को सीमित नहीं रखा है। वह प्लास्टिक के खिलाफ अभियान चलाए हुए हैं और इसकी शुरुआत उन्होंने अपने घर से ही की है।

....पेज 1 का शेष

बिरसा मुंडा के गांव उलिहातू भी विकसित किया है. इन नस्लों के पालन से किसानों की आमदनी, आजीविका एवं पोषण सुरक्षा में मदद मिली है. विश्वविद्यालय द्वारा गाँव किसानों के बीच मुर्गी की झारसीम प्रजाति, सूकर की झारसुक प्रजाति एवं बकरी की ब्लैक बंगाल प्रजाति का वितरण तथा बकरी पालन, सूकर पालन व बेकयार्ड पोल्ट्री फार्मिंग एवं प्रबंधन तकनीकों से वैज्ञानिकों द्वारा प्रशिक्षित किया जायेगा. गाँव में महिलाओं के सशक्तिकरण कार्यक्रम के तहत गृह वाटिका, कृषि उत्पाद का प्रसंस्करण एवं मूल्यवर्धन, मशरुम उत्पादन कार्यक्रमों को चलाया जायेगा. इसके आलावा गाँव में किसानों की आमदनी बढ़ाने में उपयुक्त समेकित कृषि प्रणाली, ड्रिप इरीगेशन, जल संचयन, कृषि मशीनरी,कृषि वानिकी एवं बांस की व्यावसायिक खेती आदि से सबंधित आधुनिक तकनीकी कार्यक्रमों की रूपरेखा तैयार कर कृषि विकास के सभी कार्यक्रमों को लागु किया जायेगा. मौके पर अटारी निदेशक डॉ अंजनी कुमार सिंह ने आईसीएआर झ केवीके, खूँटी की उपलब्ध निधि से सभी कार्यक्रमों में वित्तीय सहयोग देने पर अपनी सहमति प्रदान की. केवीके के कार्यक्रमों की समीक्षा करते हुए कुलपति ने जिला स्तर पर कृषि विकास को गति देने

पर बल दिया और सभी केवीके वैज्ञानिकों को जिले में 2 - 2 स्वयं सहायता समूह का गठन कर पंजीयन कराने का निर्देश दिया. उन्होंने सभी कार्यक्रमों में कृषि से जुड़े विभिन्न आयामों में किसानों की अधिकाधिक भागीदारी सुनिश्चित करने, सीड हब कार्यक्रम में प्रतिवर्ष 10 प्रतिशत की वृद्धि तय करने, केवीके को पिछले 5 वर्षो की उपलब्धियों तथा आगामी 5 वर्षो की रणनीतियों को तैयार करने, केवीके में एकमात्र बैंक खाता का संचालन, केवीके रेवोल्विंग फण्ड में उपलब्ध निधि से जिले में कृषि विकास के कार्यक्रम चलने और सभी केवीके में बीएसएनएल टेलीफोन एवं बायोमेट्रिक उपस्थिति सुनिश्चित करने का निर्देश दिया. किसानों की आय दुगुनी करने वाले कार्यक्रमों पर केवीके विशेष ध्यान केन्द्रित करें : अटारी निदेशक

समीक्षा बैठक में आईसीएआर - अटारी निदेशक डॉ अंजनी कुमार सिंह ने बताया कि केंद्र सरकार का केवीके के माध्यम से सभी जिलों में कृषि विकास को बढ़ावा देने पर पूरा फोकस है. भारत सरकार के 6 विभागों द्वारा कृषि से सबंधित सभी योजनाओं को केवीके के माध्यम से जिलों में लागु करने की योजना है. उन्होंने कहा कि सभी केवीके को वर्ष 2022 तक किसानों की आय दुगुनी से सबंधित कार्यक्रमों पर विशेष ध्यान केन्द्रित करने की जरूरत है. इसके तहत केंद्र सरकार द्वारा सभी जिले के 150 हेक्टेयर भूमि में तेलहनी फसल उत्पादन को बढ़ावा देने की योजना तैयार की गई है, जिसे आगामी रबी मौसम में कार्यान्वयन की रणनीति पर काम करे.

डॉ सिंह ने कहा कि केंद्र सरकार सभी केवीके जिलों अनुकुल एक - एक समेकित कृषि प्रणाली (आईएफएस) मॉडल को विकसित करने की जिम्मेदारी केवीके को देने जा रही है. इसके तहत जिले में माइक्रो इरीगेशन एवं पाली हाउस को विशेष प्राथमिकता दी जाएगी. केवीके में सीमित

संसाधन एवं मानवबल के बावजूद सभी केवीके को ज्यादा क्रियाशील बनाने और बेहतर आउटपुट दिए जाने की जरूरत है. अटारी निदेशक ने आईसीएआर से प्रायोजित राज्य के सभी स्थित 24 में स्थित केवीके के कार्यक्रमों एवं उपलब्धियों की समीक्षा की. उन्होंने सभी केवीके को संपदा परियोजना के तहत 50 लाख की लागत से जिले के उपयुक्त प्रसंस्करण इकाई की स्थापना का प्रस्ताव भेजने, भवन, किसान छात्रावास, वाहन, ट्रेक्टर एवं उपकरण से सबंधित प्रस्ताव भेजने तथा प्रत्यक्षण कार्यक्रमों को ज्यादा तकनीकी आधारित चलाने को कहा।

छात्रों ने बना डाली गाजर घास काटने वाली मशीन

मीरजापुर जिले के जयहिंद विद्या मंदिर के छात्र रोहित मौर्य के गाजर घास (अमेरिकी घास) उखाड़ने का एक खास इक्पमेंट हैदराबाद में आयोजित इनोवेटर्स प्रदर्शनी में वैज्ञानिकों ने हाथों-हाथ लिया और पुरस्कृत किया। राष्ट्रीय ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज संस्थान की ओर से 27-28 सितम्बर को हैदराबाद में आयोजित इनोवेटर्स प्रदर्शनी में रोहित के प्रोजेक्ट को जूरी ने नवप्रवर्तन की कसौटी पर खरा माना। इस प्रोजेक्ट में सिलेक्ट होने पर एक लाख रुपये का नगद पुरस्कार देने का फैसला किया। नए बिगनर रोहित के इस इक्पमेंट से शहर से लेकर गांव तक उगने वाली जहरीली गाजर

घास को बिना हाथ लगाए जड़ सहित जमीन से उखाड़ फेंकी जा सकती है। इस इक्पमेंट से ऐसा करना बेहद आसान हो गया है. गाजर घास की वजह से हाथों में इंफैक्शन, एलर्जी आदि बीमारियां होती है। यही नहीं यंत्र को विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद लखनऊ उप्र ने पेटेंट के लिए आवेदन भी किया है।

सीएमपीडीआई में ''स्वच्छता ही सेवा'' का प्रथम चरण सम्पन्न

रांची:सीएमपीडीआई के सामाजिक निगमित दायित्व (सीएसआर) के स्वच्छता एक्शन प्लान (सैप) के अंतर्गत ''स्वच्छता ही सेवा'' 1.09.2019 से 27.10.2019 तक मनाया जा रहा है। सीएमपीडीआई के निदेशक (तकनीकी /आरडीएंडटी/सीआरडी)आर0एन0 झा ने सिंगल यूज प्लास्टिक एवं उससे होने वाले नुकसान के बारे में प्रकाश डालते हुए कहा कि आज प्लास्टिक मनुष्य एवं पृथ्वी के सभी जीव-जंतुओं के जीवन के लिए बहुत ही नुकसानदायक साबित हो रहा है। वर्तमान में कम से कम

सिंगल यूज प्लास्टिक को हम सबको अपनी जीवन शैली से निकालने की आवश्यकता है इस मौके पर श्री राणा ने कहा कि जब प्लास्टिक हमारे जीवनशैली में शामिल हुआ तो ऐसा लगा कि यह एक क्रांतिकारी आविष्कार है जो मानव जीवन को सरल बनाने में सहयोगी है। परन्तु कालान्तर में इसके दुष्परिणाम हमारे सामने विकराल होते जा रहे हैं।

सीसीएल, गांधीनगर में दुर्गा पूजा का भव्य आयोजन

प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी सीसीएल, गांधीनगर कॉलोनी स्थित गांधीनगर क्लब में दुर्गा पूजा का आयोजन किया गया है। मुख्य अतिथि सीसीएल के सीएमडी गोपाल सिंह एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती प्रमिला सिंह ने आज 05 अक्टूबर को पूजा पंडाल का फिता काटकर उदघाटन किया और पूजा पंडाल में स्थापित प्रतिमाओं पर लगे पट का अनावरण किया गया। मुख्य अतिथि श्री सिंह ने सीसीएल कर्मियों, सीसीएल वृहद परिवार के सभी सदस्यों तथा समस्त झारखंडवासियों को शारदोत्सव, दुर्गा पूजा की शुभकामनाएं दी एवं सभी के सुखमय जीवन की कामना की।

सीएमपीडीआई में राजभाषा माह समापन सह-पारितोषिक वितरण समारोह सम्पन्न

रांची:सीएमपीडीआई (मुख्यालय) में 'राजभाषा माह समापन-सह-पारितोषिक वितरण समारोह मयूरीहॉल में आयोजित किया गया। इस समारोह के मुख्य अतिथि सीएमपीडीआई के निदेशक (तकनीकी/ईएस) के0के0 मिश्रा, निदेशक(तकनीकी/आरडीएंडटी/सीआरडी) आर0एन0झा एव ंनिदेशक (तकनीकी/पीएंडडी) ए0के0 राणा ने राजभाषामाह के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजयी प्रतिभागियों एवं विभागों को सम्मानित किया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि श्री मिश्रा ने व्यवहार की भाषा और कार्यालय की भाषा के में राज भाषा हिन्दी का अधिक से अधिक प्रयोग करनेका आह्वान करते हुए हिन्दी की भाषायी समृद्धि के कई संदर्भों को व्यक्त किया। आर0एन0 झा ने कहा कि कुछ ही दूरी पर बोली और खान पान बदल जाता है किन्तुअधिसंख्य आबादी में हिन्दी बोली और समझी जाती है। खास कर जब से सरकारी अथवा गैर सरकारी इलेक्ट्रोनिक मीडिया का चलन बढ़ा तब

से हिन्दी का प्रचार-प्रसार बढ़ा है। मौके पर ए0के0 राणा ने कहा कि गांव सेलेकर महानगर तक आसानी पूर्वक ग्राह्य है। हिन्दी सम्पर्क एवं समन्वय की भाषा है। दक्षिण के प्रदेशों के सुदूर क्षेत्रों को छोड़ कर सभी शहरों मे ंहिन्दी अनजानी भाषा अब नहीं रही है। सम्पर्कभाषा के रूप में अब पूरे भारत मे ंहिन्दी बोली और समझी जाती है। राजभाषा माह के दौरान हिन्दी निबंध (हिन्दी भाषी के लिए) प्रतियोगिता के विजयी प्रथम-श्रीसंजय कुमार सिन्हा, द्वितीय-श्री त्रिलोकीनाथ, तृतीय- आदित्य

श्रेष्ठकर रहे जब किअहिन्दी भाषी वर्ग में प्रथम-विश्वजीत सेनगुप्ता, द्वितीय-अनीश सिंह, तृतीय- जी0 आनंदराव रहे। सभी वर्गो के लिए आयोजित हिन्दी टिप्पण-प्रारूपण प्रतियोगिता के विजयी प्रथम-आशीषरंजन, द्वितीय-के0के0 राय, तृतीय-पी0के0 भल्ला रहे वही ंहिन्दी टंकण प्रतियोगिता के विजयी प्रथम-उमेशराम, द्वितीय- बिनय कुमार सिंह एवंतृतीय- शेखर कुमार रहे। सभीवर्गो के लिए आयोजित भाषण/वाद-विवाद प्रतियोगिता के विजयी प्रथम-राहुलगोपाल,

द्वितीय-शैलेषचंद्रा, तृतीय-कृष्ण झा जबकि हिन्दी कविता प्रतियोगिता के विजयी प्रथम-मेजर राघवेन्द्र सिंह, द्वितीय-मतीप्रेम चंद गुड़िया एवं तृतीय स्थान पर भास्कर तिवारी रहे। मुख्यालय स्तर पर बेहतरीन कार्य करने के लिये विजेता विभाग-कोल टेक्नोलॉजी लैब वहीं उपविजेता विभाग-गवेषण विभाग तथा क्षेत्रीय संस्थान स्तर पर सर्वोत्तम कार्य करनेके लिये विजेता संस्थान- क्षेत्रीय संस्थान-2, धनबादको अध्यक्षीय शील्ड प्राप्त हुआ।

तंबाकू निषेध पर प्रधान मंत्री का जोर

मन की बात' कार्यक्रम में प्रधानमंत्री मोदी ने विस्तृत रूप से बताया कि युवाओं को किस प्रकार से ''कचरा मुक्त भारत' के विचार से जोड़ा जा सकता है। **सिंगल यूज प्लास्टिक पर रुख मजबूत** प्रधानमंत्री ने सिंगल यूज प्लास्टिक के खिलाफ अपने मजबूत रुख को दोहराया और गांधी जयंती पर भारतीयों को इसके खिलाफ आंदोलन का हिस्सा बनने के लिए आमंत्रित किया। मोदी ने युवाओं से स्वस्थ भारत का निर्माण करने का आह्वान करते हुए कहा है कि ई सिगरेट का निषेध किया जाना चाहिए और इसके के संबंध में भ्रांतियां दूर करनी चाहिए। हाल ही में भारत में ई सिगरेट पर प्रतिबंध लगाया गया है। इसके बारे गलत धारणा पैदा की गई है। ये भ्रांति फैलाई गई है कि ई सिगरेट से कोई खतरा नहीं है। ई सिगरेट के बारे लोगों में इतनी जागरूकता नहीं है कि वे इसके खतरे को लेकर भी पूरी तरह अंजान हैं।

रूरल इंडस्ट्री पॉलिसी बनेगी, देश और दुनिया में है बांस उत्पादों की मांग: मुख्यमंत्री

रांची: मुख्यमंत्री श्री रघुवर दास ने कहा कि लघु व कुटीर उद्योग से बड़ी संख्या में लोगों को रोजगार मिलता है। इनके नियमों को सरल कर ज्यादा से ज्यादा लोगों को इससे जोड़ रहे हैं। झारखंड में जल्द ही रूरल इंडस्ट्री पॉलिसी बनने जा रही है। इसमें टेक्सटाइल की तर्ज पर ग्रामीणों को प्रशिक्षित कर रोजगार प्रदान करनेवाली कंपनियों को रियायतें दी जायेंगी। झारखंड में बांस, खजूर आदि का उत्पादन बहुतायत में होता है। इससे जुड़े उत्पादों को बढ़ावा दें। इससे बड़ी संख्या में लोगों को रोजगार मिलेगा और किसानों को भी लाभ होगा। संथाल के सभी छह जिलों व कोलहान के तीन जिलों में इनका उत्पादन होता है। इन जिलों के सभी प्रखंडों में प्रशिक्षण सह उत्पादन इकाई लगाने का काम करें। इससे स्थानीय आदिवासी समुदाय के लोगों को रोजगार मिलेगा और उनके जीवन में बदलाव आयेगा। उक्त बातें उन्होंने एरआ स्माल फाइनांस बैंक के प्रबंध निदेशक श्री के पॉल थॉमस से कहीं। संथाल और कोल्हान में बांस व खजूर में रोजगार की संभावनाएंमुख्यमंत्री ने कहा कि संथाल के सभी जिलों के साथ ही कोलहान के चाकुलिया, पश्चिमी सिंहभूम और सरायकेला में बांस व खजूर काफी होते हैं। इससे रोजगार की संभावनाएं बढ़ी है। इन जिलों में प्रशिक्षण का काम जल्द से जल्द शुरू करें। सरकार स्कील डेवलेपमेंट के माध्यम से सहयोग करेगी। मुख्यमंत्री उद्यमी बोर्ड के कर्मियों, सखी मंडल को भी इससे जोड़ें।बांस के उत्पादों की मांग देश-दुनिया में हैमुख्यमंत्री श्री रघुवर दास ने कहा कि सिंगल यूज प्लास्टिक पर सरकार रोक लगा

रही है। बांस के उत्पाद इस स्थान को किस प्रकार भर सकते हैं, इस पर फोकस करें। गुणवत्ता पूर्ण उत्पाद बनायें। बांस के उत्पादों की मांग देश-दुनिया में है। अभी भी विदेशों में झारखंड के उत्पादों की मांग है। दुर्गा पूजा समेत अन्य मेलों में रांची, जमशेदपुर, धनबाद समेत अन्य प्रमुख शहरों में स्टॉल लगायें, ताकि यहां भी उत्पादों की बिक्री हो सके। इसी प्रकार देश-दुनिया में लगनेवाले प्रमुख मेलों में भी झारखंड का स्टॉल रहे।राज्य में लगभग 50 हजार लोगों को रोजगार उपलब्ध होगीबैठक में कंपनी के प्रबंध निदेशक श्री के पॉल थॉमस ने बताया कि अभी राज्य के 9 प्रखंडों में प्रशिक्षण व उत्पादन केंद्र चल रहे हैं। जल्द ही 24 और शुरू किए जाएंगे। इनके शुरू होते ही राज्य में लगभग 50 हजार लोगों को रोजगार उपलब्ध हो जाएगा। धीरे धीरे उनकी संख्या और बढ़ेगी।बैठक में मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव श्री डॉ सुनील कुमार वर्णवाल, उद्योग सचिव श्री के रविकुमार, स्कील डेवलेपमेंट के सीइओ श्री कृपानंद झा, कंपनी के निदेशक श्री आलोक पी थॉमस, श्री अजित सेन, जयवंत होरो भी उपस्थित थे।

फोटो न्यूज

फोटो : उज्ज्वल कुमार

रांची अपर बाजार में कुछ प्रकृति प्रेमी ऐसे भी हैं जिन्होंने घर में उग आये पेड़ को काटने के बजाय दीवार को ही ऐसे बना लिया जिससे पेड़ भी सुरक्षित रहे।

पत्तों से ही बुन कर बना डाला इकोफ्रेंडली टोकरी ।प्लास्टिक को बाय बाय

आस्था, श्रद्धा भक्ति के साथ ही प्रकृति की रक्षा भी जरूरी

एक से बढ कर एक भव्य पंडाल और उसमें करोड़ो रूपये का खर्च। कोलकाता के एक पंडाल में तो दस करोड़ के सोने के गहने मां दुर्गा को सजाने में खर्च हुये हैं। मंदिरों, पूजा-पंडालों व घरों में लोग श्रद्धा-भक्ति में जुटे हुए हैं। श्रद्धा भक्ति और भव्यता के अलावा अगर हम देखें तो दुर्गा पूजा में नवरात्रि के दिनों में प्रकृति प्रेम भी झलकता है।

नवरात्र के प्रारंभ होते ही प्रथम दिन मिट्टी के कलश की स्थापना की जाती है। यह कलश मिट्टी और जौ मिले एक ढेर पर स्थापित किया जाता है। इसके साथ ही नवग्रह को स्थापित किया जाता है जिस पर विभिन्न पेड़-पौधों की लकड़ियों को रखा जाता है। जिस कलश की स्थापना की जाती है, उसे जल से भरा जाता है। कलश पर गाय के गोबर के गौरी-गणेश बनाए जाते हैं। विधिवत उनकी पूजा सिंदूर, चंदन, फूल, पान, तांबुल, अक्षत आदि से की जाती है। फिर कलश में पंच पल्लव रखे जाते हैं और उसके ऊपर नारियल को रखा जाता है। दो दिनों के बाद कलश के नीचे जौ के बीज का अंकुरण प्रजनन के सूक्ष्म रूप के साथ भूमि की उर्वरता को प्रदर्शित करता है। जौ के पौधे, मिट्टी और जल प्रकृति के मूल तत्वों में सहभागिता को दर्शाते हैं। साथ ही प्रकृति के पारिस्थितिक तंत्र में जैव एवं अजैव कारकों की महत्ता को बताता है। यही नहीं, पूजा में प्रयुक्त केला के पत्ते को ब्रह्माणी के रूप में रखा जाता है। हल्दी की पत्तियां मां दुर्गा के रूप में रखी जाती है। इसी तरह जयंती की पत्तियां मां कात्यायनी, बिल्व की पत्तियां मां शक्ति, अनार की पत्तियां रक्तदंतिका के अलावा सीता, अशोक और धान की पत्तियां क्रमशः शोकरहिता, चामुंडा तथा महालक्ष्मी के प्रतीक के रूप में पूजी जाती हैं। प्राध्यापक डॉ. प्रभात कुमार बताते हैं कि पत्तियों की इस तरह देवी स्वरूप में पूजा करने के पीछे इन पौधों की रक्षा करना मुख्य उद्देश्य है। साथ ही हवन सामग्रियां औषधीय पेड़-पौधे के भाग होते हैं जो वातावरण को शुद्ध करते हैं। प्रसाद के रूप में प्रयुक्त फल, दूब, बिल्व आदि का भी अपना वैशिष्ट्य है। इस तरह दुर्गा पूजा में प्रकृति का आदर और सम्मान निहित है।

इस बार कई पंडालों ने प्लास्टिक रहित पूजा करने का फैसला किया है और पूजा में इकोफ्रेंडली वस्तुओं के उपयोग का एलान किया है, जो भविष्य के आयोजनों के लिये एक सराहनीय कदम है।

वायू प्रदूषण आक्रामक बना सकता है

प्रदूषित हवा में सांस लेने से आप बीमार हो सकते हैं। लेकिन नए शोध के अनुसार, यह आपको अधिक आक्रामक भी बना सकता है। हाल ही में कोलोराडो स्टेट यूनिवर्सिटी के शोधकर्ताओं द्वारा किए गए अध्ययन से यह निष्कर्ष निकला है।

कोलोराडो स्टेट यूनिवर्सिटी के शोधकर्ताओं द्वारा अर्थशास्त्र, वायुमंडलीय विज्ञान और सांख्यिकी में अध्ययन के एक समूह से यह निष्कर्ष निकला है। टीम ने महाद्वीपीय संयुक्त राज्य अमेरिका में बढ़े हुए हमले और अन्य हिंसक अपराधों के रूप में वायु प्रदूषण से व्यवहार पर पड़ने वाले प्रभाव के बीच मजबूत संबंध होने का दावा किया है। दैनिक फेडरल ब्यूरो ऑफ इन्वेस्टिगेशन अपराध के आठ साल के आंकड़ों और दैनिक अमेरिकी वायु प्रदूषण के विस्तृत नक्शे से प्राप्त परिणाम, जर्नल ऑफ़ एनवायर्नमेंटल इकोनॉमिक्स एंड मैनेजमेंट में प्रकाशित किए गए हैं। अध्ययन के प्रमुख जेसी बुर्कहार्ट, कृषि और संसाधन अर्थशास्त्र विभाग में सहायक प्रोफेसर हैं, जिन्होंने साथी अर्थशास्त्री जुडबहम के साथ मिलकर अध्ययन किया है। एंडर विल्सन सांख्यिकी विभाग में हैं, सिविल इंजीनियरिंग और वायुमंडलीय विज्ञान विभाग में कई अन्य वायु प्रदूषण विशेषज्ञ हैं, जिन्होंने इस अध्ययन को अंजाम तक पहुंचाया है। सीएसयू शोधकर्ताओं ने तीन अत्यधिक विस्तृत डेटासेट का विश्लेषण किया हैः जिसमें एफबीआई द्वारा रोज तैयार किए जाने वाले आपराधिक गतिविधि के आंकडे, अमेरिकी एनवायर्नमेंटल प्रोटेक्शन एजेंसी मॉनीटर्स द्वारा 2006-2013 तक के रोज एकत्र किए गए।

अपराजिता के सुंदर फूल

नवरात्रि के दौरान मां दुर्गा पर अपराजिता फूल से पूजन की विशेष मान्यता है। इसके अलावा भी अपराजिता के कई औषधीय गुण भी हैं।अपराजिता (वानस्पतिक नाम:Clitoria ternatea) एक खरपतवार है। अपराजिता लता वाला पौधा है। इसके आकर्षक फूलों के कारण इसे लान की सजावट के तौर पर भी लगाया जाता है। ये इकहरे फूलों वाली बेल भी होती है और दुहरे फूलों वाली भी। फूल भी दो तरह के होते हैं - नीले और सफेद। बंगाल या पानी वाले इलाकों में अपराजिता एक बेल की शक्ल में पायी जाती है। इसका पत्ता आगे से चौडा और पीछे से सिकुडा रहता है। इसके अन्दर आने वाले स्त्री की योनि की तरह से होते है इसलिये इसे 'भगपुष्पी' और 'योनिपुष्पी' का नाम दिया गया है। इसका उपयोग काली पूजा और नवदुर्गा पूजा में विशेषरूप में किया जाता है। जहां काली का स्थान बनाया जाता है वहां पर इसकी बेल को जरूर लगाया जाता है। गर्मी के कुछ समय के अलावा हर समय इसकी बेल फूलों से सुसज्जित रहती है।

अपराजिता के बीज सिर दर्द को दूर करने वाले होते हैं। दोनों ही प्रकार की अपराजिता बुद्धि बढ़ाने वाली, वात, पित्त, कफ को दूर करनी वाली है। अपराजिता के इस्तेमाल से साधारण से लेकर गंभीर बीमारियों का उपचार किया जा सकता है। यह शरीर के विभिन्न अंगों में होने वाले सूजन के लिए भी लाभप्रद है। आइए जानते हैं आसानी से पाए जाने वाले अपराजिता के गुण के बारे में।

अपराजिता का वृक्ष झाड़ीदार और कोमल होता है। इस पर फूल विशेषकर वर्षा ऋतु में आते हैं। इसके फूलों का आकार गाय के कान की तरह होता है, इसलिए इसको गोकर्णी भी कहते हैं। अपराजिता सफेद और नीले रंग के फूलों के भेद से दो प्रकार की होती है। नीले फूल वाली अपराजिता भी दो प्रकार की होती है :-(1) इकहरे फूल वाली (2) दोहरे फूल वाली। कहा जाता है कि जब इस वनस्पति का रोगों पर प्रयोग किया जाता है तो यह हमेशा सफल होती है और अपराजित नहीं होती। इसलिए इसे अपराजिता कहा गया है।

चुपचाप गुजर गया अंतर्राष्ट्रीय पशु दिवस

अंतर्राष्ट्रीय पशु दिवस 4 अक्टूबर को दुनिया भर में मनाया जाता है। इस दिन पशुओं के अधिकारों और उनके कल्याण आदि से संबंधित विभिन्न कारणों की समीक्षा की जाती है। अक्टूबर 4 को असीसी के सेंट फ्रांसिस के सम्मान में चुना गया है झ जो जानवरों के लिए पशु प्रेमी और संरक्षक संत थे। अंतर्राष्ट्रीय पशु दिवस इस अवसर पर जनता को एक चर्चा में शामिल करने का अवसर पैदा करता है और जानवरों के प्रति क्रूरता, पशु अधिकारों के उल्लंघन आदि जैसे विभिन्न मुद्दों पर जागरूकता पैदा करता है। पशु अधिकार संगठनों, व्यक्तियों और सामुदायिक समूहों ने इस दिन पर दुनिया भर में विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया है। हम पृथ्वी ग्रह को जानवरों के साथ साझा करते हैं और यह आवश्यक है कि उन्हें भी हमारे जैसे मूलभूत अधिकार प्रदान किए जाएँ।

अंतर्राष्ट्रीय पशु दिवस का इतिहास

माना जाता है कि विश्व पशु दिवस को पहली बार एक जर्मन लेखक हेनरिक जिमर्मन द्वारा मनाया गया था। 4 अक्टूबर को इसे मनाने के लिए प्रारंभिक विचार के बावजूद, जो सेंट फ्रांसिस के दावत का दिन होता है, इसे 24 मार्च 1925 को आयोजन स्थल की चुनौतियों के कारण बर्लिन में मनाया गया। इस आयोजन में लगभग 5000 लोग इक्कठे हुए। 4 अक्टूबर के बाद इसे वर्षों से अंतर्राष्ट्रीय पशु दिवस के रूप में मनाया जाता है। शुरू में इस आंदोलन को जर्मनी में मनाया गया और धीरे-धीरे स्विट्ज़रलैंड, ऑस्ट्रिया और चेकोस्लोवाकिया (वर्तमान समय के चेक गणराज्य और स्लोवाकिया) जैसे आसपास के देशों में भी इसकी लोकप्रियता जा पहुंची। 1931 में फ्लोरेंस, इटली में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय पशु संरक्षण सम्मेलन ने अंतर्राष्ट्रीय पशु दिवस के रूप में 4 अक्टूबर को मनाने के लिए एक प्रस्ताव पारित किया और अनुमोदित किया। गुज़रे वर्षों में अंतर्राष्ट्रीय पशु दिवस ने वैश्विक स्वीकृति प्राप्त की और इससे समबंधित कई इवेंट्स अब समन्वयित प्रयासों के परिणामस्वरूप और इस धरती पर पशुओं के संरक्षण के प्रति संवेदीकरण बढ़ाने के मूल उद्देश्य से लोगों के स्वैच्छिक हितों के रूप में आयोजित किए जा रहे हैं। 2003 के बाद से ब्रिटेन स्थित पशु कल्याण दान संगठन नेचरवाच फाउंडेशन दुनिया के चारों ओर अंतर्राष्ट्रीय पशु दिवस के संगठन के लिए अग्रणी और प्रायोजित है। अंतर्राष्ट्रीय पशु दिवस क्यों मनाया जाता है। जानवरों के बारे में जागरूकता पैदा करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय पशु दिवस मनाया जाता है: पशुओं की स्थिति बेहतर करने और उनके कल्याण मानकों में सुधार करने के लिए। संवेदनशील प्राणी के रूप में जानवरों को पहचानें और उनकी भावनाओं का सम्मान करें। सभी कार्यक्रमों, समारोहों, जागरूकता अभियान और प्रसार का उद्देश्य इन दो लक्ष्यों को प्राप्त करना है। सामाजिक आंदोलनों में लोगों को एक लक्ष्य को हासिल करने के लिए एकजुट किया जाता है खासकर जागरूकता फैलाने और लोगों के दृष्टिकोण में बदलाव लाने के लिए। मानव और जानवर एक-दूसरे पर मानव सभ्यताओं से पहले ही प्रभाव डालते हैं। मानव जीवन शैली में परिवर्तन का एक ही पारिस्थितिक तंत्र, जिसका हम हिस्सा हैं, के कारण जानवरों के जीवन पर सीधा प्रभाव पड़ता है। गुजरते समय के साथ मानव सभ्यता ने जितनी तेजी से कदम उठाया है उसके परिणामस्वरूप कई पशु प्रजातियों के जीवन पर हानिकारक प्रभाव पड़ा है। मनुष्य के विचारों के विकास ने भी यह समझने में योगदान दिया है कि जानवर भी संवेदनशील प्राणी हैं और उनके कल्याण का महत्व सर्वोच्च है। अंतर्राष्ट्रीय पशु दिवस यह स्वीकार करता है कि प्रत्येक जानवर एक अनोखा संवेदनात्मक प्राणी है और इसलिए वह सामाजिक न्याय पाने के भी योग्य है। इस तथ्य पशु संरक्षण के लिए आधार बनता है। यह अवधारणा महत्वपूर्ण है क्योंकि इस पर आधारित संरक्षण गतिविधियां केवल लुप्तप्राय प्रजातियों तक ही सीमित नहीं है बल्कि धरती पर सभी जानवरों के लिए है जो बहुतायत में हो सकते हैं लेकिन इनमें से प्रत्येक व्यक्ति को बेहतर जीवन का अधिकार प्राप्त होता है। विभिन्न मानव क्रियाओं का पशु जीवन पर स्थायी प्रभाव पड़ता है इसलिए यह महत्वपूर्ण है कि हम मनुष्य के रूप में जानवरों के जीवन में सुधार करने के लिए सक्रिय रूप से कार्य करने की जिम्मेदारी रखें।

पहाड़ों के साथ अन्याय कर रहे हैं हम

कुछ साल पहले अन्गारा में पहाढ़ ध्वस्त होना एक भूवैज्ञानिक घटना और भी पहाढ़ हो सकते हैं ध्वस्त ।

डॉ. नितीश प्रियदर्शी

रांची के रॉक गार्डेन पर बना होटल

रांची के पास अन्गारा के एक गाँव में 46 फीट ऊँचा पहाढ़ अचानक तेज आवाज के साथ ध्वस्त हो गया था। वैसे तो पहाढ़ धसने की घटना विश्व मैं कई जगह होती है जैसे बांग्लादेश के चटगांव में एक ऊँचा पहाढ़ ध्वस्त हो गया था तब बांग्लादेश में ही तन्किर पहाढ़ के ध्वस्त हो जाने से 11 लोग की मृत्यु हो गई थी । उसी तरह अमेरिका के कैलिफोर्निया शहर के पास एक काफी ऊँचा पहाढ़ ध्वस्त हो गया था जिसके चलते कई मकानों को नुकसान पहुँचा।

अन्गारा एवं दुसरे जगहों में पवर्तों के ध्वस्त होने के कारणों में असामनता हैं। जहाँ बांग्लादेश में पहाढ़ ध्वस्त होने के पहले भूकंप आया था तथा कैलिफोर्निया में कुछ दिन पहले से पत्थर पर्वत से नीचे आ रहे थे वहीं अन्गारा में ये सब कारण नदारद थे। यहाँ पहाढ़ अचानक रातों रात ध्वस्त हो गया बिना किसी भूकंप अथवा किसी अन्य भूगर्भीय हलचल के। वैसे विश्व में जहाँ जहाँ ज्वालामुखी विस्फोट होता है वहां पर इस तरह की पहाढ़ गिरने की घटना होती है। लेकिन अन्गारा में पहाढ़ ध्वस्त होने का कारण कुछ और ही थी। रांची के आस पास की बहुत से छोटे एवं मध्यम ऊंचाई के पहाढ़ काफी वृद्ध हो चुके हें तथा वे काफी अपरदित हो चुकें हैं जैसे रांची पहाड़ , पिठोरिया के पास की कुछ पहाड़ इत्यादि। यानि ये सब अपरदन के चक्र के अन्तिम चरण में पहुँच चुके हें। कुछ वर्ष पूर्व रांची पहाड़ का कुछ हिस्सा भी धंसा था जिससे वहां के लोगों में डर व्याप्त हो गया था। अन्गारा के पहाड़ के अचानक ध्वस्त होने का एक ही कारण नजर आता है वह है काफी ज्यादा अपरदन के फलस्वरूप तथा पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण के प्रभाव में पहाड़ ध्वस्त हो गया था। इस को भूविज्ञान की भाषा में "मास वेस्टिंग" कहतें हें जहाँ पहाड़ पर उपस्थित किसी खास कमजोर स्थान से अचानक मिटटी एवं बोल्डर गुरुत्वाकर्षण के प्रभाव में तेजी से नीचे आवाज करता हुआ खिसकने लगता है। अन्गारा में जहाँ पर यह धसान हुआ वहां पर कई वृक्ष भी मलबे के अन्दर दब गए। झारखण्ड में प्रकृति ने अपना संदेश दे दिया है। जरुरत इस बात की है की रांची के आस पास वैसे पहाड़ की पहचान की जाए जो काफी अपरदित हो चुके हें या जिनके बहुत से भाग मिटटी में परिवर्तित हो चुके हों, एवं उनमे मौजूद चट्टान खतरनाक स्तिथि में टिके हों । ये भी जरुरी है की अपरदित पहाड़ के आस पास जो आबादी हो उनको इस खतरे से आगाह किया जाए ।

दुनिया भर में सेव की 4400 प्रजातियां पायी जाती हैं। और इसे अब तक ज्ञात सबसे पुराने फलों में माना गया है। शायद आदम और हव्वा के समय का।

अखबार के स्वामी सन कम्युनिकेशन के लिये प्रकाशक मनोरंजन सिंह द्वारा प्रकाशित तथा मेसर्स डी. बी. कॉर्प लिमिटेड,प्लॉट नं535 एवं 1272 ललगुटवा पुलिस स्टेशन, रातू, रांची (झारखंड) से मुद्रित और सन कम्युनिकेशन,अपोजिट कब्रिस्तान गेट नं.-2, टीवीएस गली, रातू रोड, रांची-834001 (झारखंड) से प्रकाशित। संपादकः मनोज कुमार शर्मा* (पी.आर.बी. अधिनियम के तहत खबरों के चयन के लिये उत्तरदायी)आर.एन.आइ. पंजीयन क्रमांक : JHAHIN00962, email:greenrevolt2019@gmail.com. Ph. 8539978825, 8825374626. समस्त विवाद रांची न्यायालय के अधीन होंगे।